जैन तीर्थवंदना

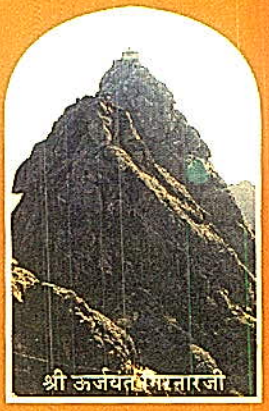

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 7 | ISSUE : 11 | MUMBAI, MAY 2017 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

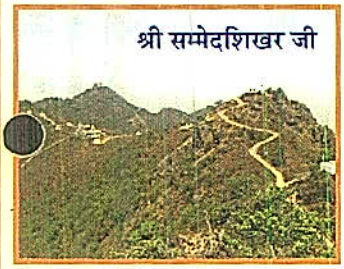

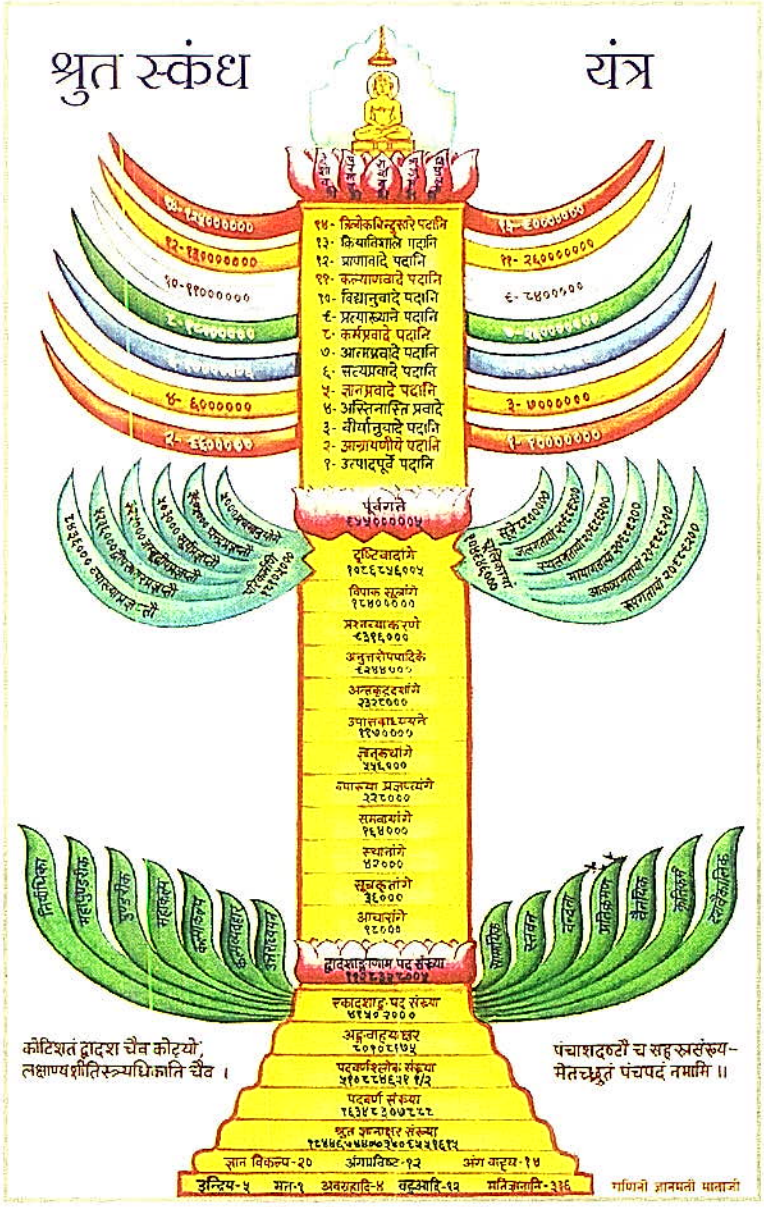

श्रुत पंचमी, 30 मई 2017

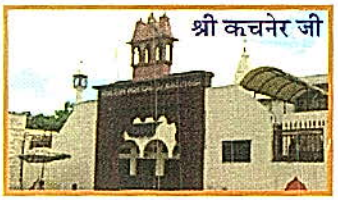

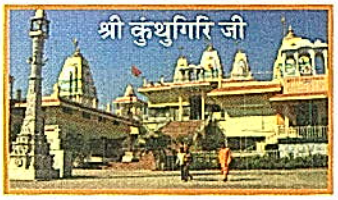

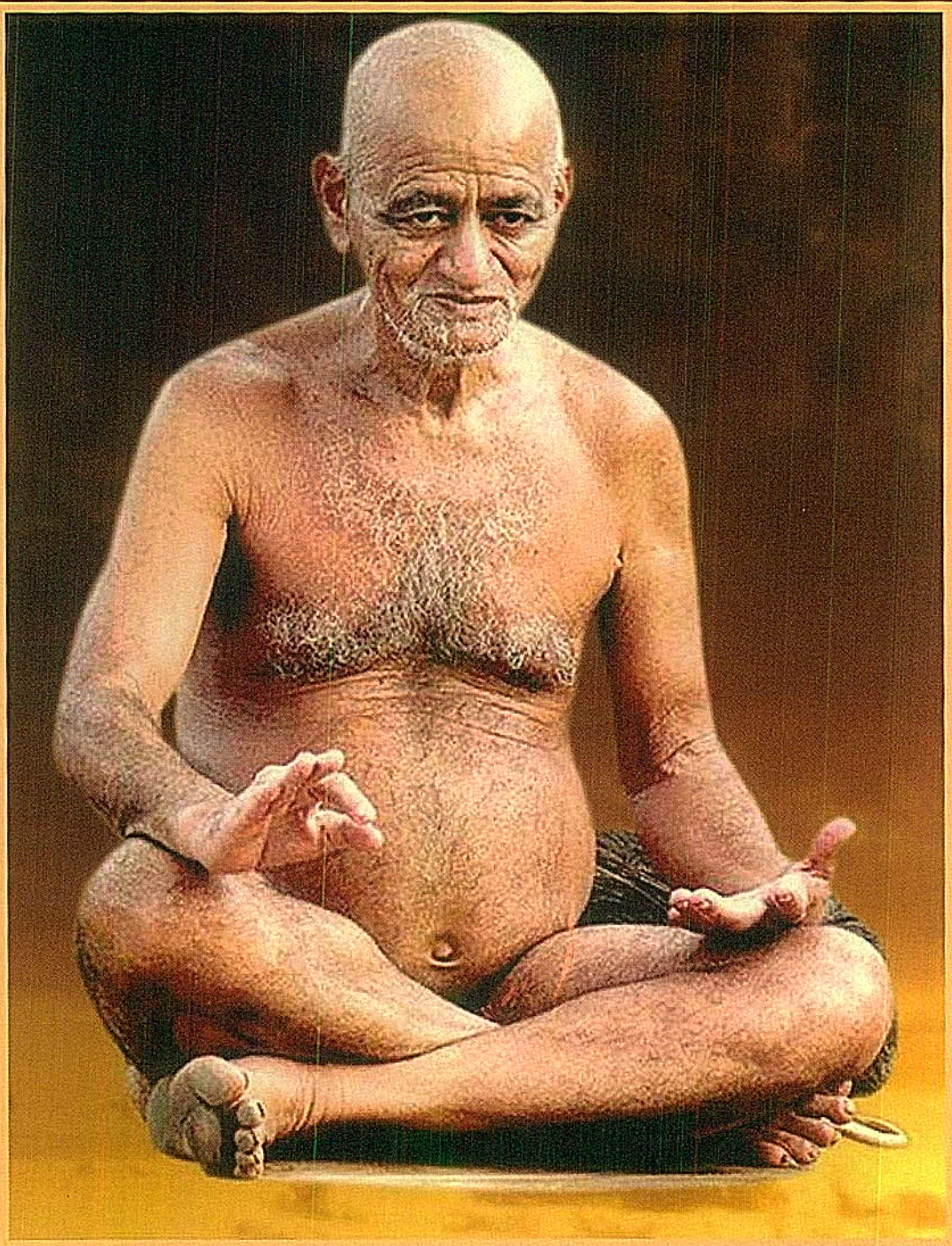

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91-1463-301100, 260101 Fax : +91-1463-250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

चलो करे हम तीर्थ वन्दना, अवसर बड़ा महान है।

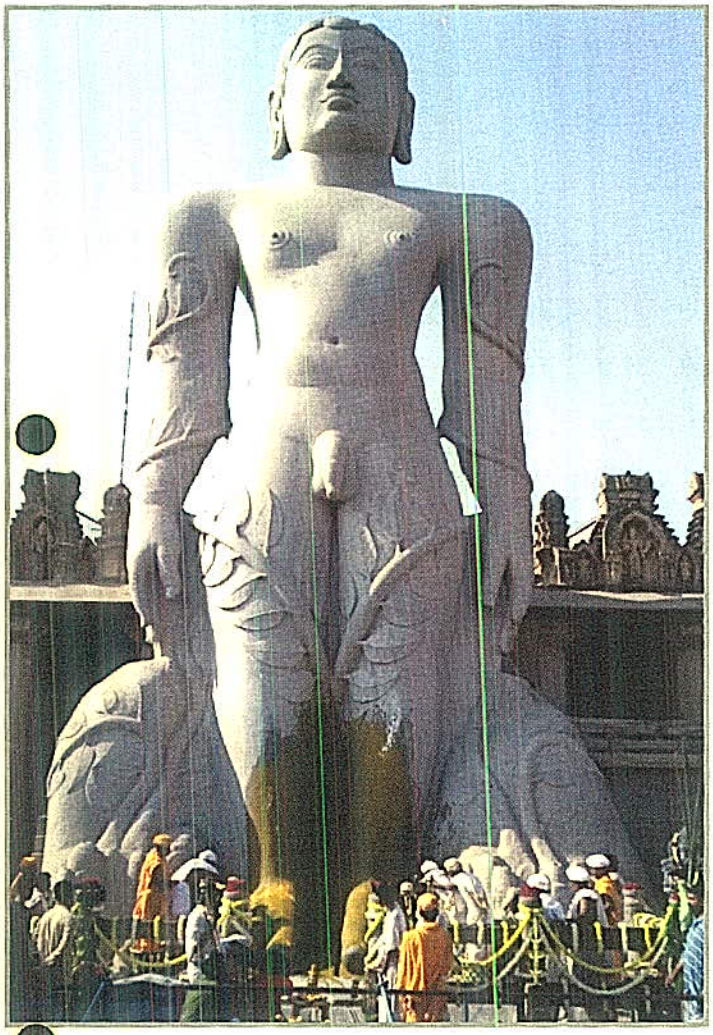

बचपन में जब भी गर्मी की छुट्टियाँ लगती थी, ननिहाल याद आता था कुछ रिश्तेदार याद आते थे मिलकर यात्रा का कार्यक्रम भी बनता था। यात्रा की तैयारी में कई दिन व कईयों का सहयोग लगता था। तीर्थयात्रा के अनुभवियों से चर्चा होती थी। फिर यात्रा का कार्यक्रम बनता था। घर, रिश्तेदार यहां तक की गाँव में भी प्रसन्नता का वातावरण बनता था। ग्रामवासी निर्धारित प्रस्थान के समय बेण्डबाजे व माला के साथ शुभकामनाएं देकर विदा करते थे। कितना अच्छा माहौल व आत्मीयता होती थी। लेकिन आज क्या है? गूगल बाबा व न्यूक्लियर फैमिली के जमाने में जहां रिश्ते गायब हैं, वहीं आदमी का आदमी से स्नेह गायब है। ऐसे समय में कौन-कब-कहां होकर आ जाता है पता ही नहीं चलता, पहले एक-दूसरे के घर आत्मिक निमंत्रण होता था, अब निमंत्रण भी होटल में होता है, घर पर हाथ से बना खाना गायब है, होटल की व्यावसायिकता का टेस्ट कायम हो रहा है। हम रेडिमेड के युग में है, अब तो हर चीज रेडिमेड है, जरूरत है तो सिर्फ नोट की और नोट के चक्कर में मनुष्य ऐसा उलझा है कि कब रात हो जाती है, कब दिन ढ़ल जाता है पता ही नही? पेट तो भरा जा सकता है, पेटी नहीं भरी जा सकती है। अर्थ युग में व्यर्थ के चक्कर में मनुष्य की महत्वाकांक्षाएं बढ़ती चली जा रही है। इन सबके बीच आज भी यदि कायम है तो हमारे परम पावन तीर्थों की ऊर्जा, उनकी पवित्रता, वहां मिलने वाली शांति और सौन्दर्य, पक्षियों का कलरव आज भी तीर्थों पर देखने व सुनने को मिल जाता है।

शहरी जिंदगी के धूल-धुँए भरे कोलाहल में आज भी तीर्थों की घंटियाँ हमें आवाज लगा रही हैं, रिश्ते घरों में बचे नहीं, अनाज में स्वाद बचा नहीं, फिर भी तीर्थों में आज भी शांति व प्रकृति का सौन्दर्य बचा है। जहां कुछ समय सुकून से निकाला जा सकता है और वहां की आध्यात्मिक ऊर्जा से आनेवाली पीढ़ी को

परिचित कराकर उनमें धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया जा सकता है।

ग्रीष्मावकाश का समय है, मैं आपसे इस अपेक्षा के साथ निवेदन कर रही हूं कि आप ग्रीष्मावकाश में अपने नौनिहालों के साथ कुछ दिन तीर्थयात्रा में गुजारें और बच्चों को तीर्थयात्रा के संस्कार दें । ए.सी., कूलर, होटल संस्कृति से परे कुछ दिन प्रकृति की गोद में व्यतीत करने की कोशिश करें जिससे उनमें तीर्थों व प्रकृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो सके। हमारे तीर्थों पर जाने से वहां की व्यवस्थाओं में सुधार होगा। तीर्थों के महत्व से आगामी पीढ़ी परिचित हो पाएगी। हमारी प्राचीनता ऐतिहासिकता के प्रति उनकी सोच जागृत होगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने एक सौ आठ मंदिरों के जीर्णोद्धार का संकल्प लेकर कार्य प्रारम्भ कर दिया है, आप भी चाहें तो अपना सहयोग मंदिर जीर्णोद्धार में कर सकते हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहती हूं कि आप तीर्थों पर जाएं, देखें किस मंदिरजी को जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। आप अपनी इच्छा से तयकर मंदिर जीर्णोद्धार हेतु प्रयास करें।

यह सब इसलिए कि आज हमारी संस्कृति यदि जिंदा है तो इसका कारण है हमारे पूर्वजों द्वारा निर्मित मंदिर व तीर्थ। यदि वे तीर्थों की सुरक्षा व यात्रा के संस्कार नहीं देते तो ये तीर्थ हमारे हाथ से चले गए होते। आज हम देख रहे हैं जहां हमारा आवागमन कम है, वहां तीर्थ असुरक्षित हो रहे हैं, उनपर कब्जा हो रहा है।

इन सभी बातों को दृष्टिगत रखते हुए मैं आपसे करबद्ध निवेदन करना चाहती हूं कि तीर्थयात्रा में सुविधा न ढूंढें वहां अपने आराध्य को ढूंढे व उनकी तपस्या का स्मरण करें, उन तीर्थों पर जाएं जहां हम कम पहुंच पाते हैं, वहां के कर्मचारियों का, सेवकों का, पुजारीजी आदि सभी से सम्मान से पेश आएं जिससे उन्हें लगे की सुदूर इलाके में भी हमारी सेवाओं की सराहना हो रही है। वहां सुविधाओं का अभाव हो सकता है लेकिन जरा सी आत्मीयता से आप और हम उन सेवकों का दिल जीत सकते हैं। आशा है, अपेक्षा है, आप गर्मी की छुट्टियों का उपयोग तीर्थवंदना हेतु करेंगे क्योंकि यह अवसर महान है।

अंत में कहना चाहूंगी कि गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी के महामस्तकाभिषेक हेतु अब हमारे इंतजार की घड़ियां समाप्त हो रही हैं। धीरे-धीरे समय नजदीक आ रहा है। चातुर्मास का समय निकट है। चातुर्मास में श्रवणबेलगोला में बहुत से सम्मेलन होने जा रहे हैं, सभी उसमें अपनी भूमिका के अनुरूप सम्मिलित होकर लाभ लें।

महामस्तकाभिषेक हेतु कलश आबंटन प्रारम्भ हो गया है, सभी के भाव बहुत हैं कि हम सभी को कलश करना है, शीघ्र ही कलश आरक्षित कर लें। जिससे मुख्य समारोह में कलश करने का सौभाग्य मिल सके। हमारा प्रयास है कि सभी कलश करेगें, इसलिए सबको आना है, ऐसा मन अभी से बनाकर रखें।

तीरथ करलें पुण्य कमालें, प्रभु के गुण गालें।

इन्हीं भावनाओं के साथ

जय-जिनेन्द्र जय जय जय-गोम्मटेश

Sarita Jain

- सरिता एम. के. जैन

संदर्भ-भगवान गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक-18

इस बार की श्रुतपंचमी कुछ खास है

-डॉ.अनुपम जैन, इंदौर

जगद्गुरु स्वास्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी द्वारा 17 फरवरी 2018 से महा मस्तकाभिषेक की तिथियाँ घोषित की जा चुकी हैं। योजनाबद्ध रीति से अगस्त-नवम्बर 17 के मध्य महिला, युवा, पत्रकार, विद्वत् सम्मेलन की तिथियों की घोषणा हो चुकी है। प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पधारने हेतु अनेक विदेशी विद्वान आतुर हैं। इन सम्मेलनों से मात्र कुछ माह पूर्व जिनवाणी के संरक्षण एव हमें अपने कर्तव्यों की याद दिलाने वाला महापर्व श्रुत पंचमी (ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी) इस वर्ष 30 मई 2017 को आ रहा है।

सदियों से सामान्यत: 12 वर्ष के अन्तराल से आयोजित होने वाले श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक के आयोजन के पीछे एक भाव श्रमणसंस्कृति की मूल परम्परा का देशव्यापी ही नहीं विश्वव्यापी प्रचार भी है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व आचार्य धरसेन, पुष्पदन्त एवं भूतबलि ने क्षीण होती श्रुत परम्परा के संरक्षण के भाव से ही षट्खंडागम ग्रंथराज की रचना की थी। इस महान सिद्धान्त ग्रंथ पर आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, शामकुन्ड, तुम्बलूर, बप्पदेव एवं वीरसेन ने अत्यन्त विस्तृत टीकायें लिखी। हमारे प्रमाद तथा राजनैतिक भौगोलिक परिस्थितियों के कारण आज हमारे पास केवल आचार्य वीरसेन स्वामी कृत धवला टीका ही उपलब्ध है। शेष टीकाओं के मात्र उल्लेख मिलते हैं। वर्तमान युग में भी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी ने इस ग्रंथ पर सिद्धान्तचिन्तामणि टीका लिखी है। उन्होंने धवला टीका के कुछ विशिष्ट अंशों का विशेष स्पष्टीकरण दिया है। वस्तुत: धवला टीका स्वयं में ही अत्यन्त विशाल है। इसकी क्लिष्टता के कारण ही तो आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चकवर्ती को गोम्मटसार ग्रंथ का सृजन करना पड़ा। आज हमारे पास कसायपाहुड एवं उस पर लिखी परिवर्ती टीकाओं एवं उसपर आधारित ग्रंथों, षट्खंडागम का टीका साहित्य एवं उस पर आधारित ग्रंथों, तत्वार्थ सूत्र एवं उसका टीका साहित्य, आचार्य कुन्दकुन्द का अध्यात्म साहित्य, भूगोल-खगोल विषयक तिलोयपण्णत्ती, तिलोयसार आदि ग्रंथ, पुराण साहित्य, आचार विषयक साहित्य की समृद्ध विरासत है किन्तु आज जितना उपलब्ध है उससे ज्यादा वर्तमान में अनुपलब्ध है। गणित का अध्येता होने के नाते मैं सप्रमाण कह सकता हूँ कि आज गणित-भूगोल-खगोल विषयक ही 50 से अधिक ग्रंथ या तो अनुपलब्ध हैं अथवा विभिन्न सरस्वती भंडारों, जैन ग्रंथ भंडारों मे उपेक्षित पड़े हैं। इनमें आचार्य श्रीधर, अनन्तपाल, महिमोदय, चन्द्रम, राजादित्य आदि की कृतियां सम्मिलित हैं। मात्र इतना ही नहीं आचार्य धरसेन कृत जोणिपाडुह (योनिप्राभृत) जैसा महत्वपूर्ण ग्रंथ आज उपलब्ध (अपूर्ण) होने के बावजूद भी अप्रकाशित है। आचार्य कुन्दकुन्द कृत (?) झाणज्झयण पाहुड (ध्यानाध्ययन प्राभृत) भी ध्यानस्तव एवं ध्यानशतक के साथ अज्ञात रचनाकार की कृति के रूप में प्रकाशित होकर अपने महत्व को खो बैठा। आचार्य कुमुदेन्दु कृत सिरिभूवलय ग्रंथ पर अध्ययन करने की लोग चर्चा तो कर रहे हैं किन्तु आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने जितना काम कर दिया था उनके आगे यत्किंचित ही काम हुआ है। कुछ उल्लेखनीय नहीं हो पाया। निरन्तर प्रयास एवं अपुष्ट सूचनाओं के बाद भी हम गन्धहस्ति महाभाष्य को भारत नहीं ला पा रहे हैं। अखिर क्यों? हम उसकी स्थिति भी तय नहीं कर पा रहे हैं।

हमारे पावन तीर्थों की जानकारी देने वाली हमारी जिनवाणी है। अत: जिनवाणी की रक्षा के पर्व श्रुतपंचमी (30 मई) पर हम संकल्प करें कि

1- किसी भी हस्तलिखित ग्रंथ का एक भी पृष्ठ हम न जलायेंगे न जल प्रवाहित करेंगे अपितु किसी पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र (जैसे कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ) को प्रदान कर उसका संरक्षण करायेंगे।

2- अपने जिन मंदिर में रखे हस्तलिखित ग्रंथों की किसी योग्य विद्वान, पांडुलिपि संसाधन केन्द्र से विस्तृत सूची बनवाकर उसका प्रचार करेंगे।

3- यदि आपके यहां 500 वर्ष से अधिक प्राचीन या दुर्लभ अप्रकाशित ग्रंथ हो तो उसकी डिजिटल कापी करायेंगे।

श्रवणबेलगोला के आगामी महामस्तकाभिषेक के उपलक्ष्य में होने वाले विद्वत् या प्राकृत सम्मेलन में उपस्थित विद्वानों को ऐसी सूची उपलब्ध कराकर हम जिनवाणी सेवा का पुण्य अर्जित कर सकते हैं। इसलिए यह श्रुत पंचमी खास है। हम इस कार्य में आपके सहयोग हेतु प्रस्तुत हैं। जिन मन्दिरों/शास्त्र भंडारों का सूचीकरण हो चुका है, शास्त्र व्यवस्थित हैं वहाँ के व्यवस्थापक भी इस दिन विनयपूर्वक शास्त्र भंडारों को खोलकर साफ सफाई करें। यदि वेष्ठन पुराने हैं तो उन्हें बदलें। उनमें कीट आदि का प्रकोप तो नहीं है? यदि हैं तो उसे सम्यक रीति से सुरक्षित करें।

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक की पूर्व बेला में आयी इस श्रुतपंचमी के पावन पर्व पर हम यदि एक भी आचार्य प्रणीत ग्रंथ का उद्धार या संरक्षण कर सकें या करा सकें तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि एवं भगवान के प्रति सच्ची भक्ति होगी। ★★★★

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 11 — मई 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

इस अंक में

Sacred religious events in Tamilnadu	7
कर्नाटक में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर	12
श्री 1008 केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान, जामोद-	13
श्री मुक्तागिरि क्षेत्र-मध्यप्रदेश में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर	15
श्री औंढा-नागनाथ क्षेत्र-महाराष्ट्र में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर	16
श्री पालीताना क्षेत्र-गुजरात में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर	18
शिखरजी में चल रहे कार्यों का सर्वेक्षण-	19
जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता	27
श्रुत से है जैन संस्कृति की पहचान	31
अवसाद से बचने जैन धर्म के सिध्दांत अनुकरणीय..!!	33
प्रकृति की सुरम्य गोद में सिद्धक्षेत्र: मुक्तागिरि	34
चम्पाबाग जैन मन्दिर, ग्वालियर	36

गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक की तिथियाँ

तं गोम्मटेशं
पणमामि
णिच्चं

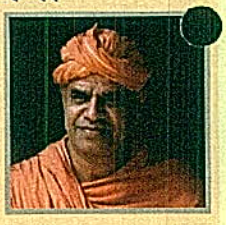

बाहुबली महामस्तकाभिषेक का उद्घाटन
: 7 फरवरी, 2018

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और अन्य कार्यक्रम
: 8 फरवरी, 2018 से 16 फरवरी, 2018

महामस्तकाभिषेक शुभारंभ
:17 फरवरी, 2018

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

परम पूज्य मुनिद्वय श्री अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से प्राप्त सहयोग राशि से प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

Sacred religious events in Tamilnadu

In Chennai, for several decades Digamber Jains had only one Digamber Jain Temple, located at Sowkarpet-Chennai North; the fact is that many villages – suburbs around Chennai including Puzhal, vichchur, Vilangadupakkam, Chinnampedu, Mogapair, Kolappakkam, Mangadu, Adampakkam were once flourishing jaina villages; except Puzhal all other have lost their Jaina population entirelyl; but these places have abandoned Thirthankar images; in Vilangadupakkam a moderate size ancient jinalayam is present in good condtion but no jain is living there; with the generous help and devotion of BDJTKC and very particularly of Sri M.K.jain who always strives for restoration the lost glory of Jainism in Tamil nadu these abandoned Thirthankaras at three places got small shines and were brought to worship.

Periodically jains migrated to Chennai and settled in different areas; to meet the need for a Jinalaya in their place, temples were constructed at Adampakkam, Pammal, Ambattur, Kolaththur Maraimalai nagar and a small shelter like structure at Mogapair; of these the temple at Maraimalai nagar is a newly constructed and the one in Kolaththur is entirely remodelled and expanded; Panchakalyana celeberations were conducted in both of them

1) Pancha Kalyana celeberations in the newly built 1008 Sri Naminatha Thirthankar Jinalayam – Maraimalainagar-Chennai

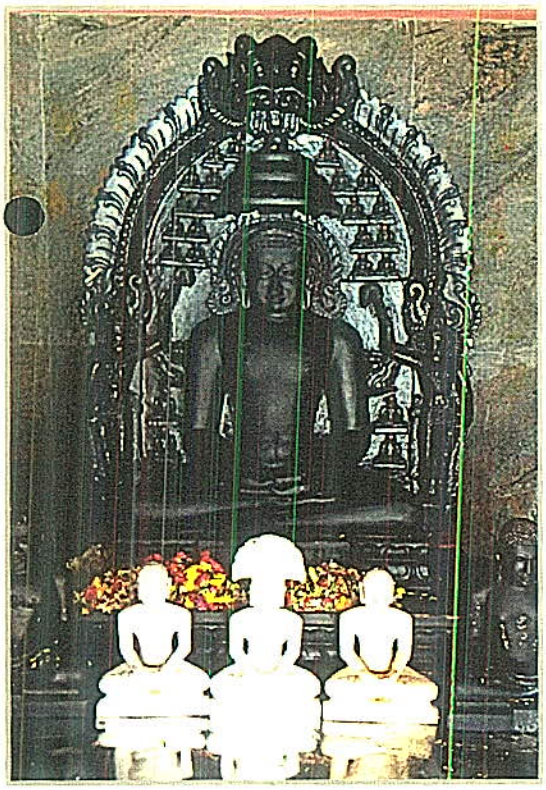

Maraimalai Nagar is a satellite town developed in the Chennai Metropolitan area. It lies between Chennai and Chenglepet, on the Grand Southern Trunk road (GST) (around 20 Km from Chennai airport)- whoever comes to Chennai from South or leaves Chennai to the Southern districts on GST road has to pass through Maraimalai nagar only; for jains, particularly for Digamber Jaina ascetics who make Sri Vihar to Chennai or leaves Chennai to Southern Tamilnadu, Maraimalai nagar is an ideal place for a brief stay for Ahar; it should be noted that not a single Digamber Yathri nivas / Upacharya, Jinalayam is present in the hundred Km stretch between Chennai and Kanchipuram for the use of Jaina ascetics on Srivihar; It was a long felt need to have a Jinalayam and Yathrinivas at Maraimalai nagar where about 20 families migrated from their villages are living; time has

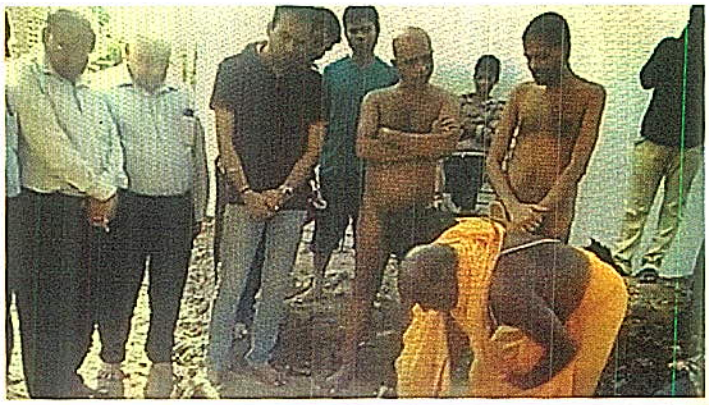

ripened; 108 Muni Sri Antharathmana Prasanna sagarji Maharaj, Munisri 108 Sri Piyush Sagarji Maharaj, 105 Sri Parvasagara KShullak maharaj with His Holy Sangh made Sri Vihar in 2016 in Tamilnadu; it was the effect of good karma that when Muni Sri passed through Maraimalai nagar, devotees with intense devotion requested Muni Sri to lay the foundation stone for a Jinalayam at Maraimalai nagar; it was 1st may 2016; foundation stone was laid and Muni Sri blessed the devotees to dedicate the Jinalaya for the 21st Thirthankara Sri Naminatha; Thus Jinalaya has born; it is a record that with in 11months a jinalayam, Yathri Nivas, Student hostel were constructed and pancha kalyana was celeberated for three days from 21-4-2017; members of BDJTKC led by Sri M.K.Jain attended the sacred functions of foundation laying and Panchakalyana celebrations; H.H. Jinakanchi Lakshmisena Bhattarak Bhattacharya Swamigal, Head, Digamber jain Sri Mutt, Melsiththamur and H.H. Thirumalai-Arahanthagiri Sri Dhavalakeerthi Swamiji conducted Prathista celebrations; Community Service groups including Ahimsa walk, Samana Iyakkam, Thiru. Kalalkolathur Chinnappa jain extended their full service; finally the entire credit goes to Sri.Rajasekaran jain who dreamt and succeeded to have a jain center at Maraimalai nagar; on the final day of panchakalyana celeberations, a conference of Jaina engineers was conducted in which hundreds of engineering students participated to get the guidance from the elder Engineers who have lot of experience in various engineering professions;

2) Pancha Kalyana Celeberations in the remodelled and expanded Three Tier 1008 Sri Vijaya Parswanatha Jinalayam – Kolaththur- North Chennai

No: 92, HUSSAIN COLONY, VIVEKANANDAR SALAI, KOLATHUR, CHENNAI - 600 099

One of the recently built Digamber Jain temple is the famous Kolaththur Vijaya Parswanathar jinalayam. This landmark Jinalayam in the northern outskirts of Chennai lying on the Northern Grand trunk road was constructed in 2002 by the munificent Sri G.Ramesh nainar Jain. a visionary who has contributed a lot for the cause of the society and religion. This jinalayam is a beautiful temple dedicated to Sri Parswanatha here called Vijay Parswanatha; various festivals, Poojas, vidhans, religious discourses, community related social activities are going on right from day one. Originally it had a small shrine, but recently a major remodelling was done with additions; now the jinalaym is a

three tire one having a shrine for Sri Parswanatha at ground level, Samavasarana temple in the middle and Sri Vasupooyaya Thirthankara temple at the top; it is attached to bigger multi function halls in all the three floors with centralised A.C facility. A kitchen with a big dining hall is also present; Panchakalyana Prathista mahothsava was celeberated for three days in the last week of April; 108 Sri Vishweshsagar Muni Maharaj visited and guided the function; H.H.Lakhshmisena Bhattarak of Jinakanchi Digamber Jain Sri Mutt and H.H. Thirumalai Arahanthagiri Sri Dhavalakeerthi Bhattarak graced the function. another very important valuable addition to the temple is that it has library containing a rare collection of religious books donated by the late Sri Devendra nainar jain of Arni.

3) Acharya 108 Sri Puspadanta sagar Yatri Nivas at the foot of the Holy Kuntha Kuntha hill - (Ponnur hill) with modern facilities Near Vandavasi - Thiruvannamalai District, Tamil nadu

Attention of jains and others living outside the borders of Tamilnadu started turning on the glorious history of Jainism in Tamil land; Jainism, an ancient religion of Tamil land has a great history never seen anywhere in the Indian subcontinent; It has left indelible marks in the form of inscriptions, sculptures, paintings, caves, stone beds, literary - grammatical works, script for Tamil language, and above anything and everything else they have given sacred agamic works to the mankind. Tamil nadu is the land of great Acharyas, Kundha Kundha, Akalanka, Samanthabadra, vamana, Pushpasena, Gunabadra, Thiruthakka devar, Ilanmko Adigal, Mallishena , the list is endless; There are several athisaya kshetras; there is no parallel in the whole world to the sacred jaina hills at Madurai with 2500 years old Tamil-Brahmi inscriptions, ascetic stone beds, sculptures; the jaina hill at Kazhugumalai (8th CE) where hundreds of great Munis performed Thapas, where 100 inscriptions are in vatteluththu script inscribed on rocks are found, where hundreds of Thirthankara images, images of Sasanadevathas Ambika and Padmavathi sculpted on virgin rocks stand as a solid evidence explaining the glorious past of Digamber Jainism in Tamil land; except to those of Ajantha, there is no parallel to the paintings of Siththannavasal Jaina cave temple in Pudukkottai district; till recently jains living outside Tamilnadu, jains settled in Tamil nadu knew nothing about the unparalleled glorious antiquity of Tamil jains; now the trend has started changing! Jain sravaks and sravikas from other states, Digamber Jain ascetics, jain and non-jain scholars are interested to visit the jaina sacred places in Tamil land; periodically many sat-sanghs of Digamber Jain ascetics visit Tamilnadu; particularly jains, either individually or in groups, or families from North India are very eager to make pilgrimage tour in Tamilnadu; in 2018 the great grand Mahamasthakabisheka of Bahubali in Sravanabelagola, Karnataka is conducted; during that time many who visit Karnataka for the celebration may be interested to visit Kuntha Kuntha hill and other sacred places in Tamil nadu. The first requirement for the visitors, very particularly the younger generation, is a place for comfortable stay; Keeping all these in mind construction a yathri nivas with all modern facilities at Kuntha Kuntha Hill (Ponnur hill) is almost nearing completion. With the blessings of 108 Sri Antharathmana Prasan sagarji Muni maharaj, 108 Sri.Piyush Sagarji Munimaharaj and 105 Sri Parvasagar Shullak maharaj Sri M.K.Jain and Srimathi Saritha M.K.Jain laid the foundation stone in 2016. The yatri nivas is named after the highly revered Acharya 108 Sri Puspadanta sagarJi Maharaj. The Yatrinivas is being constructed by Acharya Kundha Kundha Syadvad Digamber Jain Trust, a part of Sri Sridhar Nainar Temple and student hostel complex; Sri Kundh Kundh Syadvad trust whole heartedly thanks the donors and very particularly Sri.M.K.jain, the back-bone for all dharmic activities in Tamilnadu, for his continuous support in letter and spirit.

4) Tamilnadu Tamil jain Bhawan- Shikharji

(MadhubenMain Road, Sikharji, Giridhi Dt. Jharkhand Near Kalash Mandir)

in the sacred presence of Parampoojya 108 Sri Acharya Sidhdhantha Chakravarthi Sambhava Sagarji

A Five day, Three Great and Grand celebration by Tamil Digamber Jains at the foot of the Sacred Hill Sri Sammed Sikharji

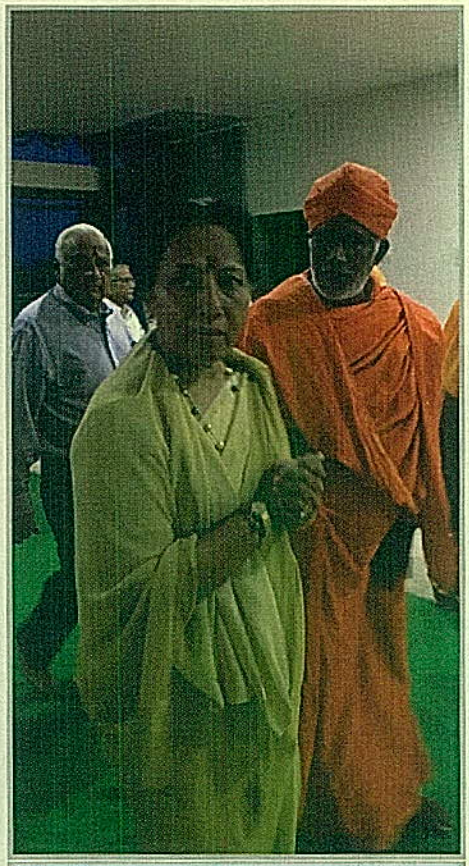

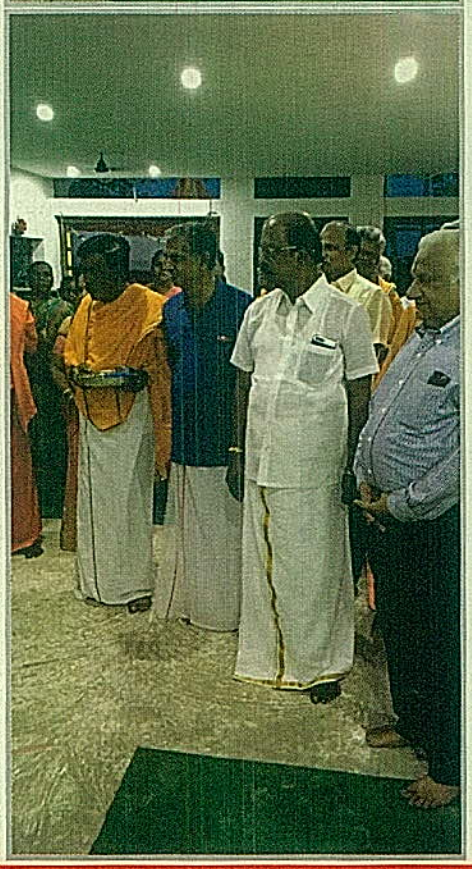

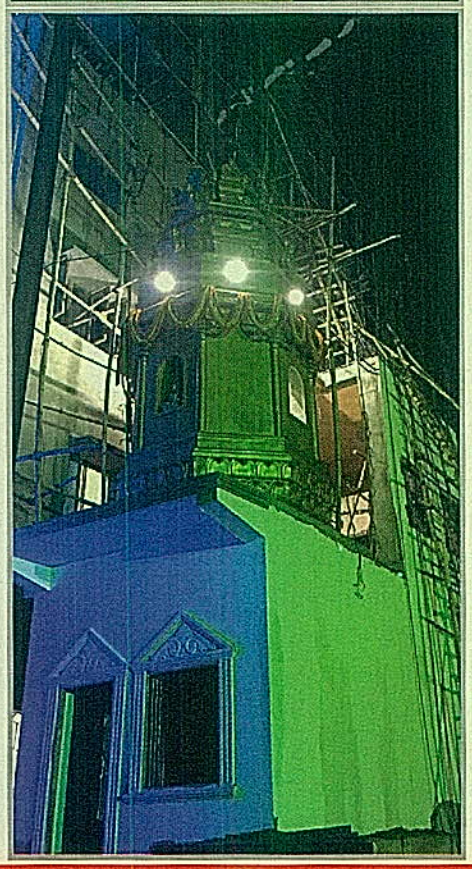

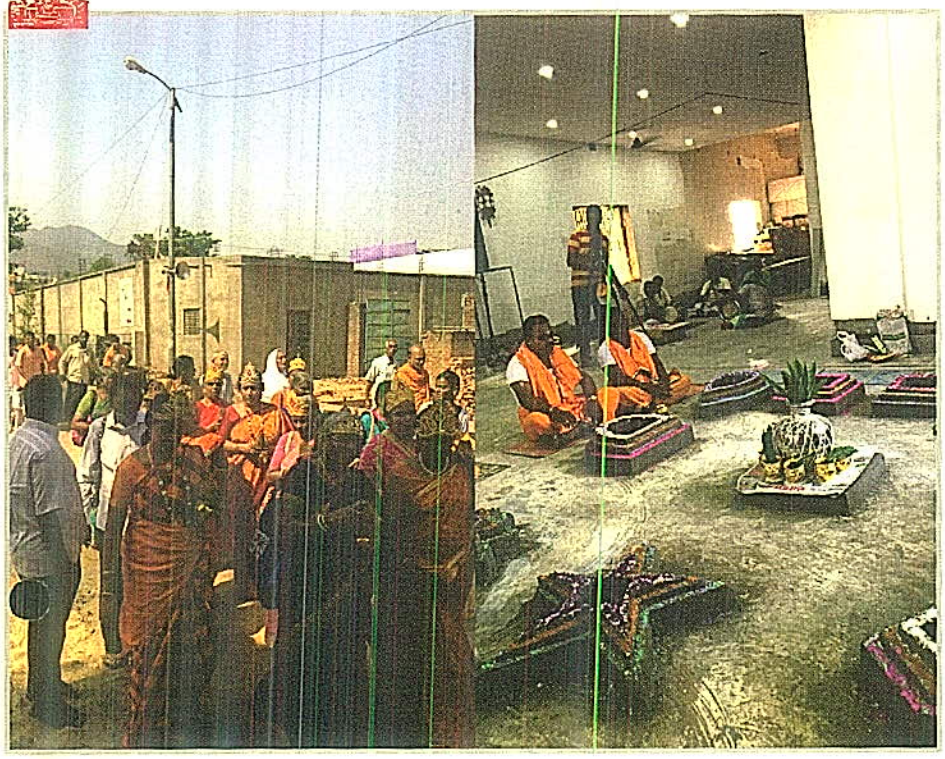

Tamil Digamber jains has made history on 5th May 2017. It was a religiously eventful day for Tamil Digamber jains at Sri Sammed Shikharji; on that day

1) a newly built 7 storey Tamilnadu Tamil jain Bhawan was declared open and dedicated to the pious devotees visiting Sri Sammed sikharji by Smt.Sarita M.K.Jain and Sri.M.K.Jain on the early hours of 8th Monday,

2) a newly constructed Sri Chandrapraba Thirthankar Lalitha koot Jinalayam was dedicated to Sri Chandrapraba Thirthankara and

3) A beautiful Chandrapraba Thirthankara stone image was consecrated; a five day Pancha kalyana Prathishta mahotsava was celeberated from 5th to 9th may 2017 with great devotion ;

Sri Chandraprabhu Trust of Chennai takes the credit for planning, mobilising funds and execution of the work; about 1200 Tamil jains travelled by various modes of transport and gathered at Sri Sammed Sikharji; it was a very rare sight to see several hundred Tamil jains at one place on the peak of the sacred hill; Parampoojya 108 Sri Acharya Sidhdhantha Chakravarthi Sambhava Sagarji and His Sat sangh, Poojya 105 Sri Aryikas, Pramukhs of Jharkhand district, H.H. Swasthi Sri Lakshmisen Bhattarak swamigal, the Peetathipathi of Jinkanchi SriMutt-Melsiththamur and H.H.Sri Dhavalakeerthi battarka swamigal of Thirumalai-Arahanthagiri graced the celebrations; Scholars, religious pundits, those committed more for the community welfare gathered in large numbers, the donors were honoured in the function;

5) A five day Panchakalyana Prathista Mahostav in Sri Adhibhagawan Jinalayam Erumbur village-vandavasi taluk, Thiruvannamalai Dt, Tamilnadu

Erumbur is one of the oldest jaina villages in Tamilnadu; it has beautiful Jinalayam dedicated to Sri Adhinatha; a five day panchakalyana prathista mahotsav was celebrated from 7th to 11th of May 2017, in grand manner; the temple is unique by having Saharsakoot jinalay, a shrine for Rishaba, Bharatha and bahubali, a shrine for Acharya Manathunga, and pictures of about thirty Tami Digamber Nirguntha munis, Kshullaks, Aryikas ; about 6 of them took Sallekhana Samadhi marana; it is indeed a rare collection by Sri Bharathachakravarthi Nainar Jain, a great devotee and selfless service minded person for the cause of Jinadharma. Another unique point is that two illustrious sons of this village, Sri Chandrakeerthi Sasthriji and Somakeerthi Kshullak maharaj, father and son became the Head of Jinakanchi Digamber jain Sri Mutt at Mel Siththamur; Somakeerthi maharaj took Muni diksha as Subadra sagar and took Sallekhana; The pancha kalyana mahothsav was graced and guided by Param Poojya 108 Sri Vishwesh sagar Munivar, H.H.Swastisri Lakshmisen Bhattark of Mel Sithamur and conducted by Prathistachari Sriman. Baldev Sastriji.(pictures and news : Dr.Kanaka.Ajithadoss Jain & P.Rajendra Prasad jain)

★★★★

कर्नाटक में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

Renovation of Shri Abbakka Devi Basadi, Hiringadi, Karkala Tq., Udupi (Karnataka)

Vinod Doddanaver

The Shri Abbakka (Abbaga) Devi Basadi at Hiriyangadi, Karkala Tq., Udupi, Karnataka, was renovated recently. Rani Abbakka Chowta was a Jain Queen of Ullal, located in Mangaluru district of Karnataka State. She fought the Portuguese in the sixteenth century. The Portuguese made several attempts to capture Ullal but every time Abbakka repulsed their attack. This Basadi, dedicated to Bhagwan Shri Adinath, is named in her memory. The renovation work was possible with a grant of Rs. 3 Lakhs from the Bharatvarshiya Digambar Jain Teerthkshetra Committee. The Panchkalyanak Mahotsav was performed in the presence of Swastee Shri Lalitakeerti Bhattaraka Pattacharya Swamiji, Karkala and Rajashri Dr. Veerendra Heggadeji from 15th to 17th February 2017.

Acharya Shri Vardhaman Sagaraji and his Sangh was accorded a grand reception as they entered Karnataka at Dhulked on the banks of the river Bh. on Monday 20th March 2017. The Sangh is proceeding towards Shravanbelagola to participate in the Maha Mastakabhishek of Gommateshwar Bhagawan Bahubali in February 2018. The Sangh will be travelling via Bijapur and Belagavi. Shri D. R. Shaha, Shri Shripal Gangwal, Shri vimukta Kumar, Shri Anandi Bhai Shah, Shri D. R. Patil, Shri Kiran Patil, Shri Vinod Doddanavar, Shri Arun Yalagudri, Dr. A. R. Rotti, Shri Bharat B Alasandi, Shri Pramod Borannavar were among the hundreds of people who received them and sought their blessings.

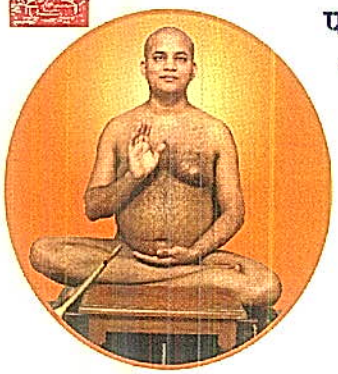

परम पूज्य मुनिद्वय श्री अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से प्राप्त सहयोग राशि से

श्री 1008 केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान, जामोद-महाराष्ट्र में प्राचीन चित्रकारी वैभव का सृजन एवं जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

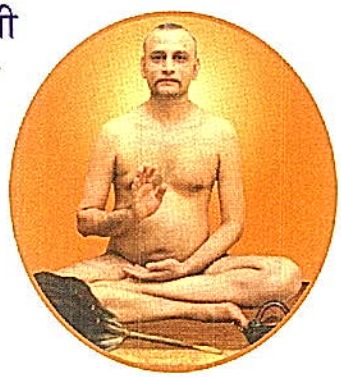

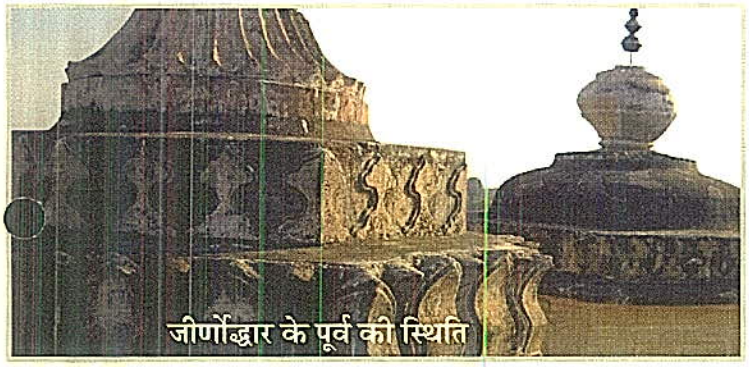

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

जीर्णोद्धार के बाद की स्थिति

भित्तिचित्र जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

भित्तिचित्र जीर्णोद्धार के बाद की स्थिति

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

जीर्णोद्धार के बाद की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के पूर्व की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के बाद की स्थिति

श्री 1008 केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान, जामोद-महाराष्ट्र में प्राचीन चित्रकारी वैभव का सृजन एवं जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

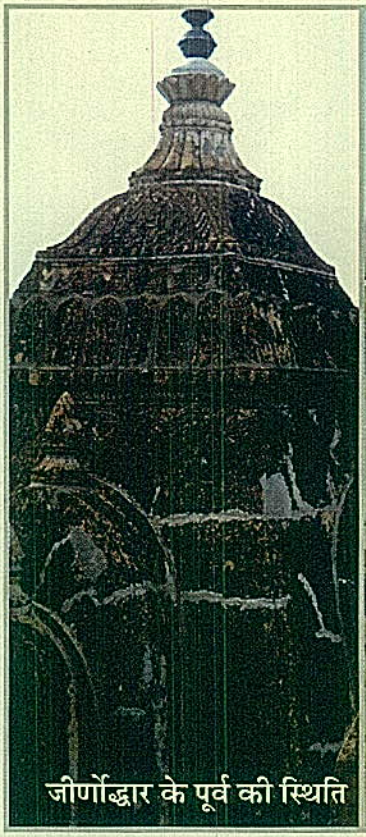

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

जीर्णोद्धार के वाद की स्थिति

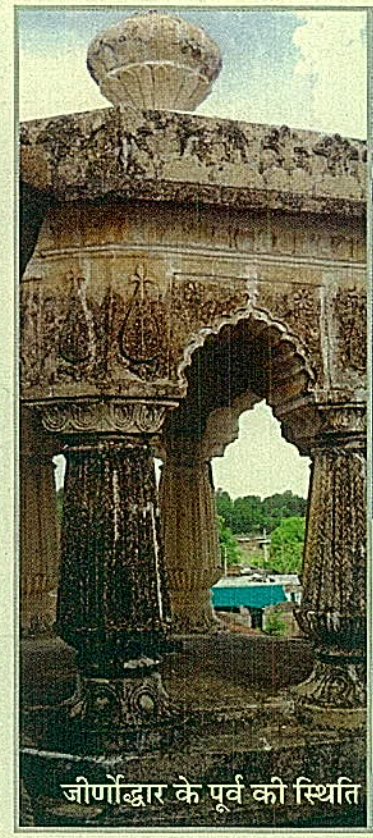

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

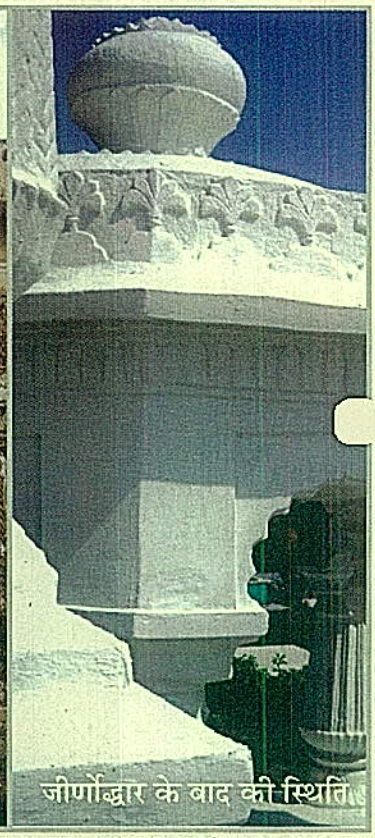

जीर्णोद्धार के बाद की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के पूर्व की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के वाद की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के पूर्व की स्थिति

तैलचित्र संरक्षण के वाद की स्थिति

श्री मुक्तागिरि क्षेत्र-मध्यप्रदेश में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

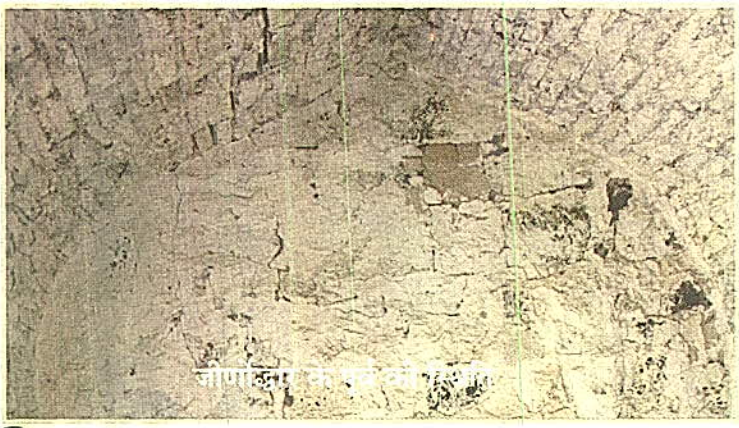
जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

जीर्णोद्धार के दौरान की स्थिति

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

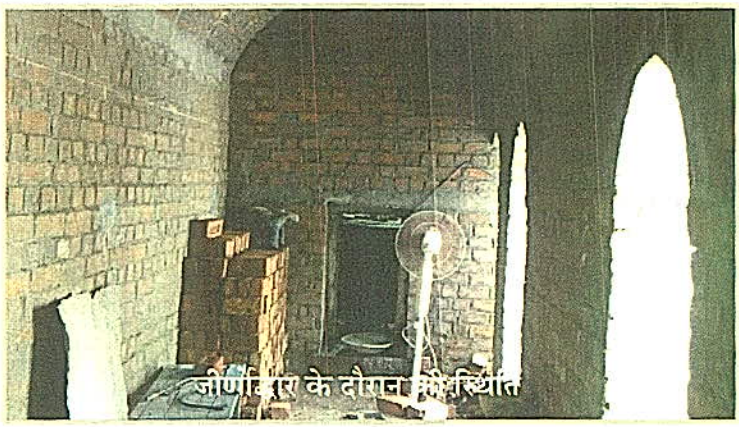
जीर्णोद्धार के दौरान की स्थिति

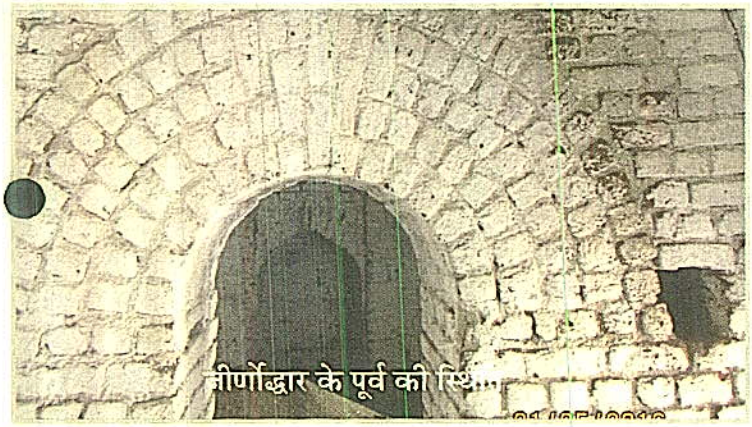
जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थि

जीर्णोद्धार के दौरान की स्थिति

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

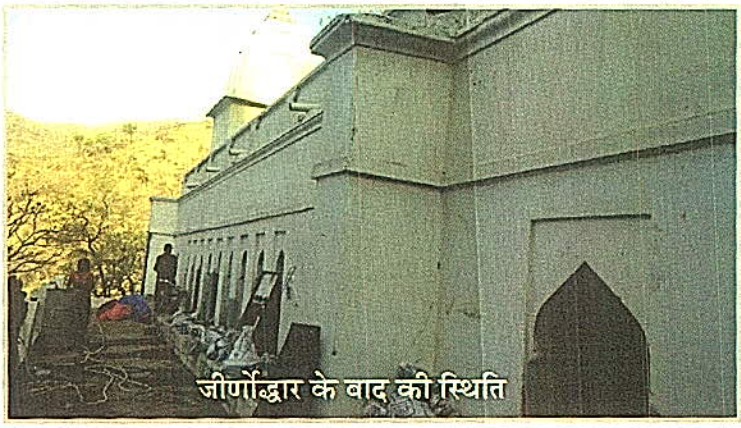
जीर्णोद्धार के बाद की स्थिति

श्री औंढा-नागनाथ क्षेत्र-महाराष्ट्र में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

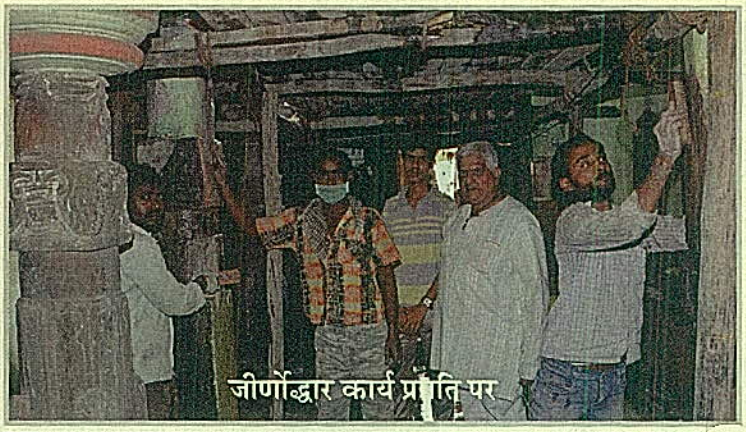
जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

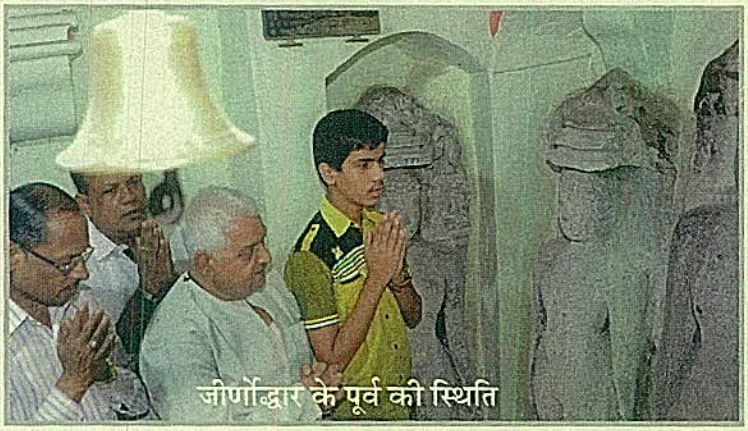
जीर्णोद्धार के पूर्व की स्थिति

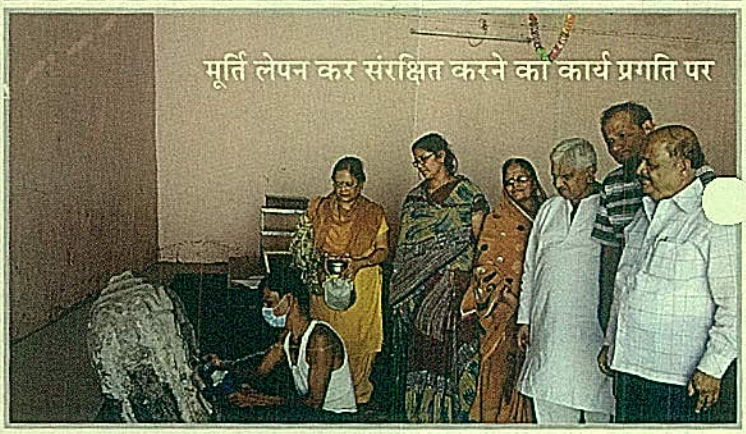
मूर्ति लेपन कर संरक्षित करने का कार्य प्रगति पर

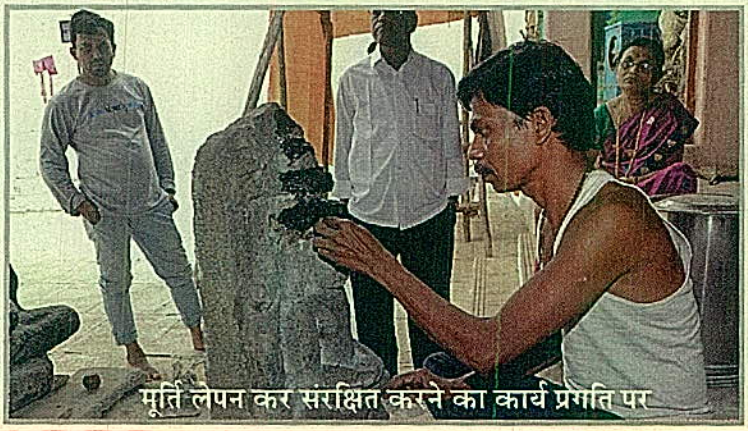
मूर्ति लेपन कर संरक्षित करने का कार्य प्रगति पर

मूर्ति लेपन कर संरक्षित करने का कार्य प्रगति पर

श्री औंढा-नागनाथ क्षेत्र-महाराष्ट्र में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

मूर्ति लेपन कर संरक्षित करने का कार्य प्रगति पर

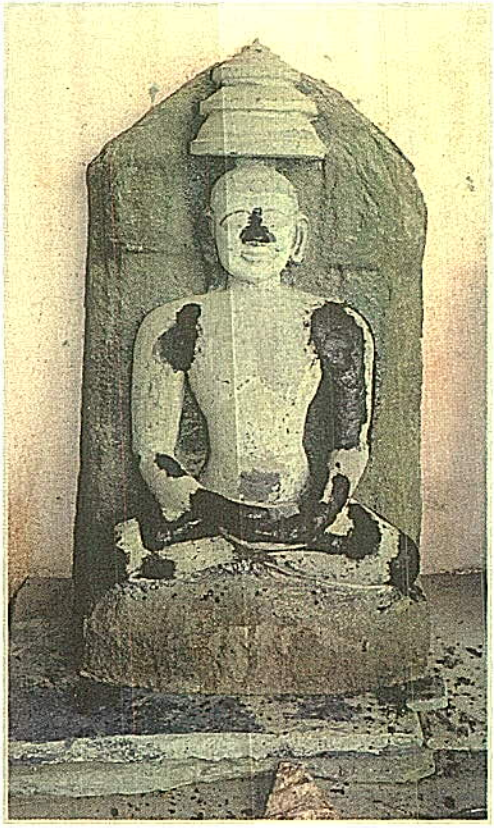

श्री पालीताना क्षेत्र-गुजरात में जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

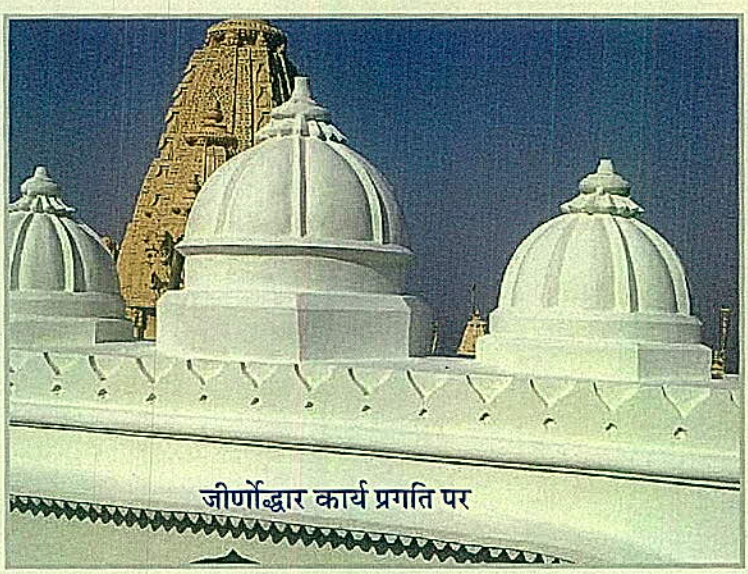
जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

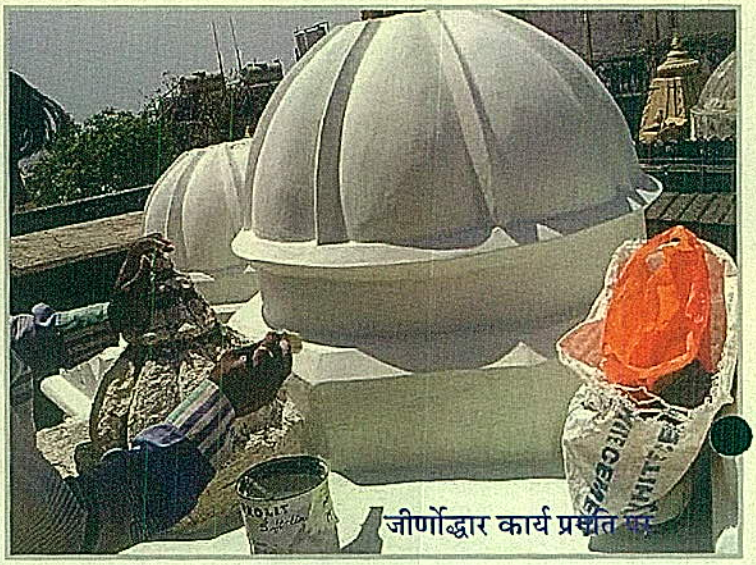
जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

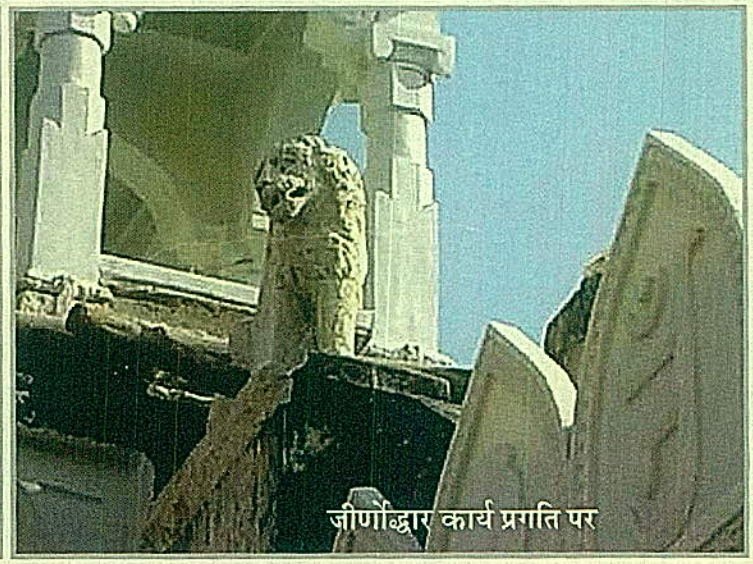
जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों द्वारा शिखरजी में चल रहे कार्यों का सर्वेक्षण

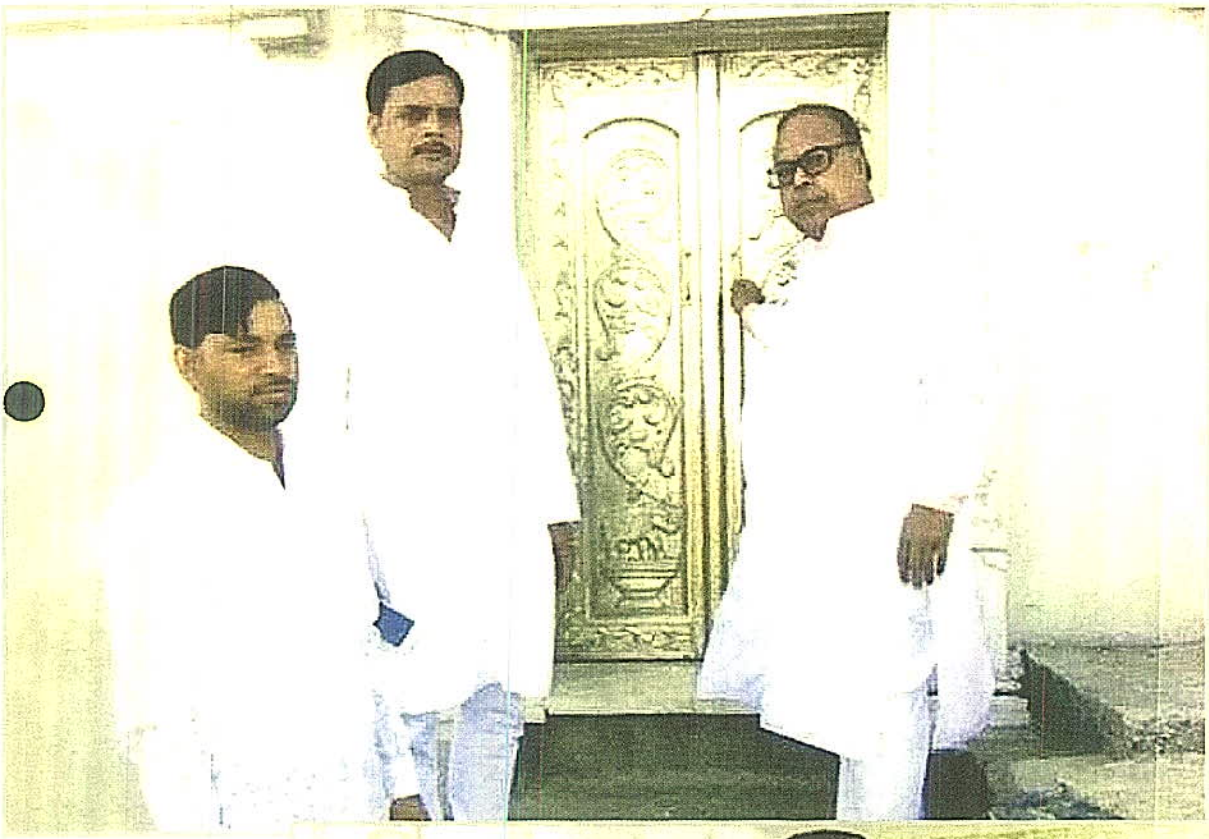

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन, महामंत्री श्री संतोष जैन, श्री महेन्द्रकुमार जैन चैन्नई दि. ०६/०५/१७ को शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी पहुँचकर पर्वत पर चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। सुवर्णभद्रकूट (पारसनाथ टोंक) पर जीर्णोद्धार का कार्य तेजी से चल रहा है। इसमें सीढ़ीयों पर टाईल्स, टोंक एवं गुफा मंदिर के चार मेटल के दरवाजे, साईड वॉल पर ग्रेनाईट, डाकबंगला से पारसनाथ टोंक तक रेलिंग, टोंक पर एक टिन से बना कॉबिन इत्यादि कार्य पूर्ण हो चुके हैं। निरीक्षण करते हुये महामंत्री संतोष जैन साथ में सहप्रबंधक देवेन्द्र जैन, विष्णु इत्यादि

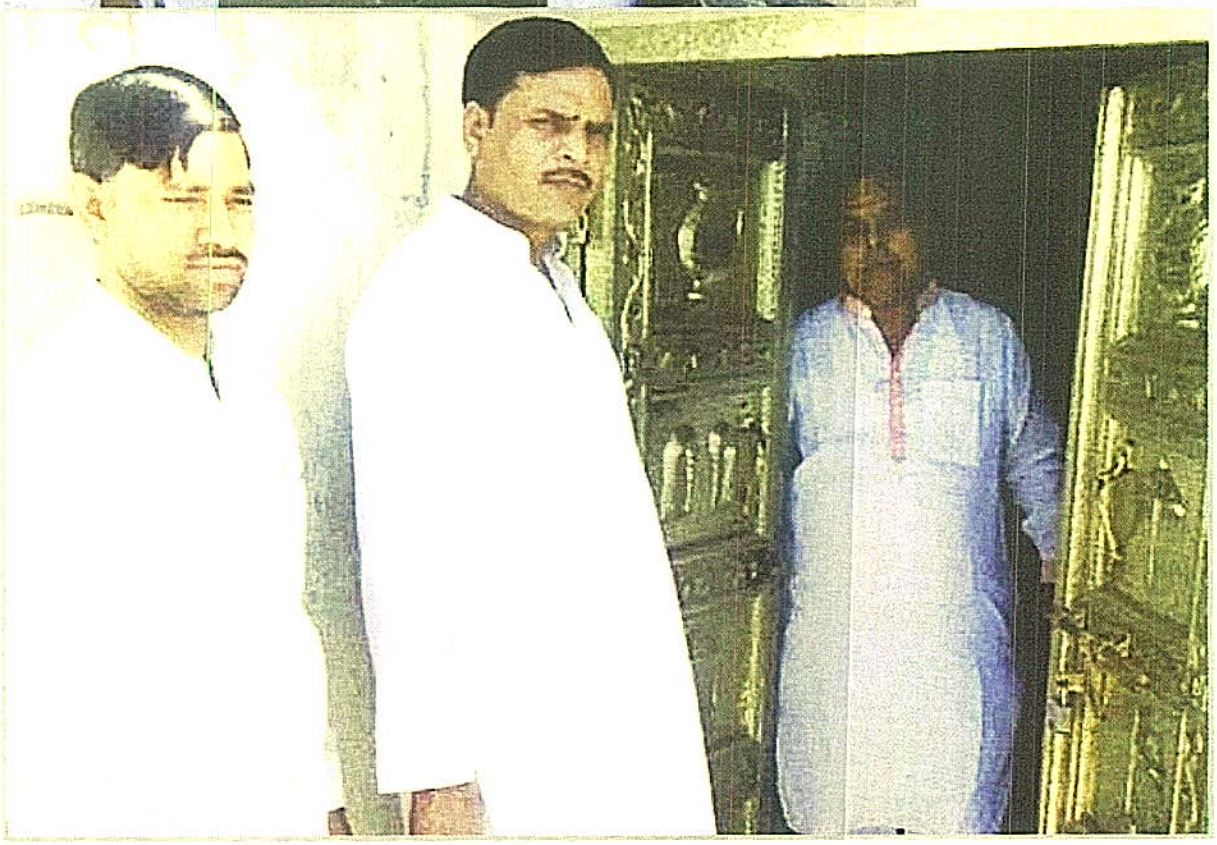

डाक बंगले से पारसनाथ टोंक तक सीढ़ीयों पर टाईल्स, साईड वॉल पर ग्रेनाईट का कार्य पूर्ण हो चुका है

पारसनाथ टोंक पर बने कॅबिन का कार्य पूर्ण हो चुका है

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, कमेटी के संरक्षक श्री महेन्द्र कुमार जैन, चेन्नई ने दिनांक 6/5/2017 को शिखरजी (पारसनाथ पहाड़) वंदना करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के ओर से पहाड़ पर चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया गया तथा आगे के कार्यों के बारे में निम्नलिखित दिशानिर्देश दिये गये।

- पारसनाथ टोंक पर चढ़ते समय दोनों ओर स्टेनलेस स्टील रॉड की रेलिंग लगवाना।
- पारसनाथ टोंक पर चढने वाली सीड़ी के बीचों-बीच स्टेनलेस स्टील रॉड की रेलिंग लगाना।
- पारसनाथ टोंक पर नई गोदरेज की नई अलमारी रखना।
- पारसनाथ टोंक गर्भगृह की मार्बल की सफाई कुशल कारीगरों से कराना।
- पारसनाथ टोंक पर लगे चारों तरफ मार्बल रेलिंग के पहले स्टेनलेस स्टील की मजबूत रेलिंग लगाकर सुरक्षित करना।
- पोर्टा केबिन के दरवाजे एवं खिड़कियों को ठीक कराना।
- पारसनाथ पर बने चार कमरों की धर्मशाला की मरम्मत,दरवाजे,खिड़की एवं रंगरोगन करवाना।
- कुशल कारीगरों द्वारा सभी टोंकों की सफाई/घिसाई कराकर उसे नये जैसा बनाना।
- गौतमस्वामी टोंक पर टाईल्स लगाकर सुन्दर बनाना एवं ईट की चार दिवारी पर ग्रेनाइट टाईल्स लगाना। आदि कार्य सौंपे गये।

संतोष जैन 'पेंढारी'

महामंत्री

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखरजी स्थित निहारीका में स्थानीय समाज द्वारा संचालित अणिंदा पार्श्वनाथ जिनालय के सभी ट्रस्टीयों के साथ एवं

तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, महामंत्री संतोष जैन, शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर ट्रस्ट के महामंत्री श्री छीतरमल पाटनी, ट्रस्टी श्री महेन्द्रकुमार जैन

चैन्नई एक सभा का आयोजन जिसमें तीर्थविकास के मुद्दों पर गहनता से चर्चा।

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखरजी मधुबन में तामिलनाडु भवन का उद्घाटन करते हुये भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, स्वामीजी अरिहंतगिरि, महामंत्री संतोष जैन एवं महेंद्र कुमार जैन चैन्नई

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखरजी मधुबन में तामिलनाडू भवन में हो रहे पंचकल्याणक महामहोत्सव में सम्मिलित अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन, संतोष जैन, महेन्द्र कुमार जैन, छीतरमल पाटनी, झारखंड न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी जैन इत्यादि.

भद्दलपुर (झारखण्ड) में भव्य वेदी प्रतिष्ठा सम्पन्न

शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखरजी से १२० किमी दुरीपर भदलपुर गांव मे दि. ०७/०५/२०१७.

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से नई खोज के अनुसार श्री शीतलनाथ भगवान की जन्मस्थली ईटखोरी। इस नूतन स्थल को कोडरमा तथा स्थानीय जैन समाज के सहयोग से सरकार द्वारा एक विशाल भूखंड दिया गया जिसपर श्री जिनालय की स्थापना की गई एवं शीतलनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित की गई।

यहां पर करवाये जा रहे वेदी प्रतिष्ठा के आयोजन मे श्री १००८ शीतलनाथ भगवान दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष, महामंत्री श्री सुरेशजी झांझरी एवं अन्य पदाधिकारी के आमंत्रण पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के.जैन, महामंत्री संतोष जैन, ध्वजापूजा एवं ध्वजारोहण करते हुए साथ मे छीतरमल पाटनी, झारखंड न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी जैन, श्री प्रभात सेठी गिरडीह, श्री विजय कासलीवाल निमियाघाट एवं अन्य सभी पदाधिकारी

भद्दलपुर, ईटखोरी ध्वजारोहण के पश्चात सभा को संबोधित करते हुये पदाधिकारी

भद्दलपूर, ईटखोरी ध्वजारोहण के पश्चात कार्यक्रम में सम्मिलित सभी पदाधिकरी

परम आदरणीय श्री अशोक पाटनी द्वारा श्रवणबेलगोला के आस पास के करीब 55 मंदिरों के जीर्णोद्धार में 10 लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया जिसके लिए मंदिर जीर्णोद्धार समिति के अध्यक्ष श्री संतोष जैन पेंढारी ने आभार व्यक्त किया है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की एवं श्रवणबेलगोला महोत्सव समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन के नेतृत्व में जैन समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल परम आदरणीय श्री अशोकजी पाटनी भाई साहब एवं धर्मवत्सला श्रीमती सुशीला पाटनी तथा पाटनी परिवार से उनके कार्यालय में भेंट करके श्रद्धेय जगत्गुरु

कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिस्वामीजी की भावनानुसार भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 में पधारने एवं जन कलाणकारी योजनाओं में सहयोग देकर उसे सफल बनाने का आमंत्रणपत्र भेंट किया जिसे ससम्मान स्वीकार करते हुए हर्षित पाटनी परिवार मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता

- श्रीमती कांता जैन, अशोकनगर

नारी की शक्ति और विशेषतायें

अनादिकाल से ही सेवा और नारी पर्यायवाची रहे हैं। बिना नारी शक्ति के शिव निर्जीव शव है। नाम की अबला नारी में बला की सेवाशक्ति है। कुटुम्ब, परिवार कबीला हो या देश, राष्ट्र, युद्ध और शांति, क्रांति और शान्ति की कैसी भी असमंजस स्थितियों क्यों न हों- सबमें नारी ही समाजसेवा की जगमगाती मशाल फ्लोरेंस नाईट एंगल है। वह दूखों को, भारी कामों को उठाने वाली क्रेन तो नहीं, मगर धारदार आरी जरूर है जो अनवरत अनथक चलती रहती है, और बड़े से बड़े उबाऊ काम को पार पाड़कर ही रहती है। सच पूछा जाए तो सेवा का दूसरा नाम नारी प्रकृति है।

नेपोलियग्रन बोनापोर्ट ने नारी की महता को बताते हुए कहा था मुझे एक [illegible] माता दे दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा। नारी सृष्टि का आधार है। नारी के बिना संसार की हर रचना अपूर्ण एवं रंगहीन है। नारी करुणा की मूर्ति है, स्वभाव से ही सरल, शांत एवं धर्मानुरागी कही गयी है। नारी सहज ही श्रद्धामयी होती है, धार्मिक भावना उसमें पुरुषों से अधिक पायी जाती है। नारी मदु होते हुए भी कठोर है। उसमें पृथ्वी जैसी सहनशीलता, सूर्य जैसा ओज, सागर जैसी गंभीरता, एकसाथ दृष्टि गोचर होती है। जहां नारी का सम्मान नहीं वह देश, राष्ट्र, समाज उन्नति नहीं कर सकता। नारी के बिना मानव विकास असंभव है। नारी समाज रुपी गाड़ी की श्रुवी है। सम परिस्थिति में वह देवी है एवं विषम परिस्थिति में वही दुर्गा एवं भवानी है।

जो कहीं कोप से कड़के तो महादुर्गा है,
और मेहरवान जो हो जाए तो फिर लक्ष्मी है,
अन्नपूर्णा है-तपस्या में उमा सी है अटल,
और वरदान में वाणी सी ही कल्याणी है।

इतिहास से लेकर आज के आधुनिक युग तक अगर नजर डालें तो भारतीय समाज में स्त्रियों का योगदान पुरुषों के मुकाबले कम नहीं है बदलते समय के साथ-साथ स्त्रियों ने भी पुरूषों के सामान ही हर क्षेत्र में तरक्की की है जिस पर कभी पुरुषों का वर्चस्व हुआ करता था जैसे राजनीति,प्रशासनिक सेवाएँ, कार्पोरेट, खेल इत्यादि सभी छेत्रों में स्त्रियों के अच्छी कार्य क्षमता एवं बुद्धिमता के प्रदर्शन को नकारा नहीं जा सकता।

इंदिरा गांधी ने देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के तौर पर शासन व्यवस्था बखूबी संचालित की। उनके नेतृत्व में भारत राजनीतिक मोर्च पर ही आगे नहीं बढ़ा बल्कि आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में उसने उल्लेखनीय प्रगति की है। शांतिदूत मदर टेरेसा ने विदेशी होते हुए भी भारत को अपना कर्मक्षेत्र बनाया। कलकता में द सोसाइटी ऑफ द मिशनरीज ऑफ चैरिटी नामक संस्था के माध्यम से उन्होंने गरीबों, दीन-दुखियों, लाचारों की सेवा का बीड़ा उठाया। उन्होंने करुणा तथा प्रेम को नया अर्थ प्रदान किया। अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित मदर टेरेसा अपनी पूरी जिन्दिगी दया का फरिश्ता बनी रहीं। उन्होंने दया, प्रेम, सेवा, मानवता के संदर्भो को भारत के परिप्रेक्ष्य में पूरी दुनिया में वितरित किया। दुर्गाबाई देशमुख ने महिलाओं के कल्याण के लिए केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की स्थापना की। सावित्रीबाई फुले देश की पहली महिला अध्यापिका व नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता थीं, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के सहयोग से देश में महिला शिक्षा की नींव रखी। सावित्रीबाई फुले एक दलित परिवार में जन्मी महिला थीं, लेकिन उन्होंने उन्नीसवीं सदी में महिला शिक्षा की शुरुआत के रूप में घोर ब्राह्मणवाद के वर्चस्व को सीधी चुनौती देने का काम किया था। उन्नीसवीं सदी में छुआ-छूत, सतीप्रथा, बाल-विवाह, तथा विधवा-विवाह निषेध जैसी कुरीतियां बुरी तरह से व्याप्त थीं। उक्त सामाजिक बुराईयां किसी प्रदेश विशेष में ही सीमित न होकर संपूर्ण भारत में फैल चुकी थीं।

तीर्थकरों को जन्म देने वाली नारी ही है। जिस प्रकार मिट्टी कुम्हार का स्पर्श पाकर अनेक आकार धारण करती है, कभी वह दीपक बनकर घने अन्धकार को दूर करती है तो कभी घड़ा बनकर प्यासे को पानी पिलाती है। ठीक उसी प्रकार बालक के गर्भ में आने के समय से ही मां उसमें संस्कारों का बीजारोपण करती है ताकि युवा होने तक उसमें धर्म की शाखायें, पत्ते,फुल व फल लग सकें। मान ही बच्चे की प्रथम गुरु मां की भूमिका 100 शिक्षकों से भी बढ़कर है। हमारे देश के महापुरुष जैसे गांधीजी, नेहरुजि, रामकृष्ण, एवं शिवाजी आदि ने मां के दिए गए संस्कारों से न केवल देश को बल्कि सम्पूर्ण विश्व को गौरवान्वित किया।

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न-भिन्न रुपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी, इन्दिरा गांधी हो, सरोजनी नायडू हो।

यदि हम वर्तमान समय को छोड़कर अतीत की और झांकें तो नारी की शक्ति, आस्था और सम्पूर्णता का पता चलता है। पहले जब वैज्ञानिक आविष्कार नहीं थे, टंकी और छेनी से मंदिर व प्रतिमाएं बनाये जाते थे। जबलपुर की मढ़िया जी का मंदिर तो इसका जीवंत उदाहरण है। एक नारी ने चक्की पीस-पीस कर पैसा इकट्ठा किया और मंदिर बनवाया। आज भी वह मंदिर हमें नारी की श्रद्धा, शक्ति एवं समर्पण का सन्देश दे रहा है। इसी प्रकार का दूसरा उदाहरण चामुन्डराय की माता को भगवान बाहुबली के दर्शन की तीव्र उत्कंठा हुई एवं कहा कि दर्शन के बिना अन्न पानी ग्रहण नहीं करुंगी तो तत्कालीन नेमिचन्द्राचार्य के, निर्देशन में पहाड़ में बाहुबली की विशाल प्रतिमा उकेरी गई, निर्माण कराया गया और उन्होंने दर्शन किये तभी बड़े-बड़े राजा महाराज और सामंतों के द्वारा अभिषेक किया गया परन्तु पूर्ण रुप से अभिषेक नहीं हुआ और एक बुढ़िया माँ की छोटी सी लुटिया के जल से संपूर्ण अभिषेक हो गया। यह नारी की श्रद्धा का ही प्रतीक है। वर्तमान काल में ज्ञानमती माताजी की दृढता देखें तो मांगीतुंगी पहाड़ में 1008 फुट की उत्तुंग आदिनाथ भगवान की प्रतिमा का निर्माण कराया। ये सब नारी की शक्ति, समर्पण और दृढता का सन्देश देतें हैं। आज की नारियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। आज वैज्ञानिक युग में नारी घर की चार दीवारी से निकाल कर ऊँचाईयों को नाप रही हैं। राजनीति से लेकर वैज्ञानिक आविष्कार एवं राष्ट्रीयता के क्षेत्र में पुरुषों के बराबर काम कर रही है। नारी आज देश के उच्च पदों पर जैसे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, विदेशमंत्री, गवर्नर एवं लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं और सफलता पूर्वक काम करके दिखा रही है। एसपी, डीएसपी, पाइलेट, जल-

थल-नभ सेनाओं में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलकर चल रहीं हैं। नारी जैसी एकनिष्ठता कहीं अन्यत्र दिखाई नहीं देती। नारी का हर क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान है। नारी ने समाज को अंधविश्वास रुढिवादिता व कुसंस्कारों को तोड़कर नयी विचारधारा दी है।

जैनधर्म संघ में नारी की महता को यथासंभव सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है। मथुरा में उपलब्ध अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि धर्मकार्यों में पुरुषों के समान नारियां भी समान रुप से भाग लेती थीं। वो न केवल पुरुषों के समान पूजा उपासना कर सकती थीं, अपितु वे स्वेच्छानुसार दान भी कर सकती थी, और मंदिर बनवाने में समान रुप से भागीदार होती थीं। जैन परम्परा में मूर्तियों पर जो प्राचीन अभिलेख उपलब्ध होते हैं उनमें सामान्य रुप से पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों के नाम भी उपलब्ध होते हैं जो इस तथ्य के स्पष्ट प्रमाण है।

आजकल लोक कल्याण के अनेकों कार्य सभी जगह चल रहे हैं। महिलाएँ संगठित होती हैं, मंडल बनाती हैं, समिति बनाती हैं, मीटिंग रखती हैं, फण्ड बनाती हैं, यथाशक्ति हर माह दान के रुप में राशि भी देती हैं। आसपास के गाँव, मोहल्लों में जाकर गरीबों की मदद भी करती हैं गरीब बच्चों को फीस, किताब एवं कॉपी देकर उनका भविष्य उज्जवल बनाने में मदद करती हैं। ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा तथा साफ सफाई से रहने की प्रेरणा देती हैं। जगह-जगह वृक्षारोपण करके पर्यावरण कायम रखने का प्रयास करती हैं। अस्पतालों में जाकर मरीजों को फल, वस्त्र एवं भोजन का वितरण करती हैं।

जब महिलाएं इतना सब कुछ करती हैं तो फिर हम अपने मंडल में एक प्रकरण यह भी रखें कि हमें अपने तीर्थ क्षेत्रों की सुरक्षा, व्यवस्था एवं संरक्षण किस प्रकार करना है। जिस प्रकार से तीर्थों की प्रगति हो सकती है, तन मन धन से जिस प्रकार से सहयोग कर सकती हैं, वे उस प्रकार से तन से, मन से, विचारों से व धन खर्च करके अपने धन एवं मानव जीवन का सदुपयोग करें। जब नारी हर क्षेत्र में आगे है तो धर्म के क्षेत्र में पीछे क्यों रहे। सभी मंडल यदि एक जुट होकर कार्य करें तो तीर्थ क्षेत्रों में चार चाँद लग जायेंगे।

तीर्थ किसे कहते हैं

हमारे तीर्थ पूजन एवं आस्था के ही केन्द्र नहीं हैं बल्कि स्थापत्य एवं मूर्तिकला, स्वाध्याय, ज्ञान, संयम, साधना के साथ-साथ जीवन जीने की आदर्श शैली सीखने के भी महान केन्द्र हैं। तीर्थक्षेत्र हमारी आस्था और श्रद्धा के केंद्र बिन्दु तो हैं ही साथ ही हमारे गौरवमयी अतीत के साक्षी हैं।

जिसका आश्रय लेकर संसार सागर से तिर जाऐ, उसे तीर्थ कहते हैं। वास्तव में आत्मा में लीन होने पर रत्नत्रय प्रगट होते हैं इसलिए आत्मा परम तीर्थ है। जहाँ पर आत्म साधना की जाती है, जहाँ से तीर्थंकरों ने निर्माण प्राप्त किया, जहाँ पंचकल्याणक हुए, उन पवित्र स्थानों को सिद्द क्षेत्र कहते हैं। जहाँ कल्याणक हुए वह कल्याणक तीर्थ कहलाते हैं। कुछ स्थान विशाल जिनबिम्बों के कारण जैसे जैनबद्री में बाहुबली भगवान की विशाल मूर्ति, मूडबद्री में रत्नों के जिनबिम्ब तथा धवलादि ग्रंथों की मूल प्रतियाँ व संरक्षण के कारण तीर्थ माना जाता है। कुछ आश्चर्यजनक घटनाओं से सम्बंधित होने के कारण श्री महावीर जी, पदमप्रभुजी, तिजारा एवं चन्द्रप्रभुजी आदि अतिशय क्षेत्रों के नाम से प्रसिद्ध हैं। तीर्थक्षेत्र जिनमन्दिर जिन संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं, श्रद्धा के केन्द्र हैं। तीर्थ क्षेत्र सामाजिक एकता एवं अखंडता के सशक्त आधार हैं। तीर्थों में भी निर्वाण क्षेत्रों का सर्वाधिक महत्व हैं, क्योंकि निर्वाण ही अंतिम लक्ष्य हैं, वेही परम साध्य है। सम्मेदशिखर वर्तमान चौबीसी व अनंतानंत तीर्थकरों व मुनिराजों की निर्वाण स्थली है व भविष्य में भी अगणित तीर्थकरों व मुनिराजों का निर्वाण यहां से होने वाला हैं। जब हम तीर्थों की वंदना कर रहे हों तब हमें विचार करना चाहिए कि जहाँ हम खड़े हैं ठीक उसके समश्रेणी में अनंत सिद्ध विराजमान हैं। इस विचार से हम भाव विभोर होंगे तभी हमारी यात्रा सफल और सार्थक होगी।

यहाँ एक प्रश्न यह उठ सकता है कि जब छट्ठे काल के अंत में प्रलय होगी, सब कुछ अस्त व्यस्त हो जायेगा तब हम कैसे समझेंगे कि यह वही स्थान है जहाँ से तीर्थंकर मोक्ष गए थे। उत्तर है कि प्रलय के उपरांत भी कुछ चिन्ह अवशेष रहते हैं। इंद्र निर्वाण पूजा के लिए चिन्ह बना देते हैं, जिससे निसन्देह कहा जा सकता है कि यह वही स्थान हैं जहाँ से अनंत तीर्थकरों ने मुक्ति प्राप्त की थी। एक दूसरा प्रश्न भी सहज ही उत्पन्न होता है कि ये तीर्थ आखिर पर्वत की चोटियाँ पर ही क्यों हैं, इनका निर्माण समतल भूमि पर क्यों नहीं किया गया। ये तीर्थ स्थान जितने सुलभ और सहज होते, लोग उतना अधिक लाभ उठाते, धर्म तो सर्व सुलभ होना चाहिये। समाधान यह है कि ये तीर्थ किसी ने बनाये नहीं। जहां साधु संतों और तीर्थकरों ने आत्म साधना की, जहाँ वे ध्यानस्थ हा गए वही स्थान तीर्थ बन गए। आत्म ध्यान के लिए निरापद स्थान पृथ्वी की गोद में बसे घने जंगल, पर्वत की चोटियाँ एवं एकांत स्थान सर्वाधिक उपयोगी है। जैसा एकान्त पर्वत की चोटियों पर उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र कहीं भी नहीं। हमारे दिगंबर मुनिराज वनवासी होते हैं। यदि हमारे तीर्थंकर नगरवासी होते तो फिर उस स्थान पर लौकिक सुख साधन सहज ही उपलब्ध रहते, तो फिर हमारी यात्रा भी पिकनिक का ही आनंद देती, तीर्थ क्षेत्रों जैसी थका देने वाली थकान नहीं होती जिससे सिद्ध जीवों के ध्यान और मोक्ष की याद ही नहीं आती।

ध्यान रहे हमारे धीर-वीर साधू संतों का एक मात्र धर्म तो ध्यान ही है। ध्यान की अवस्था में ही केवलज्ञान और मोक्ष होता है। यदि ध्यान की सिद्धी सभी भौतिक साधनों और परिवार के बीच होती तो शांतिनाथ तो तीर्थंकर और चक्रवर्ती दोनों थे, उन्हें घर में संयोगों की क्या कमी थी परन्तु ध्यान की सिद्धी के लिए जंगल में गए। ध्यान करने वाले सर्दी, गर्मी की परवाह नहीं करते। बाघ, सिंह जैसे क्रूर प्राणी भी उन्हें ध्यान से विचलित नहीं कर सके। ध्यान के लिए निरापद पृथ्वी की गोद में बसे घने जंगल और पर्वत की श्रेणियां ही सर्वोत्तम तीर्थंकर हमारे परम पिता परमेश्वर हैं, जैन धर्म के सूत्रधार हैं। अत: समस्त क्षेत्रों में भी तीर्थंकरों के निर्वाण क्षेत्रों का सर्वाधिक महत्त्व है।

तीर्थों की प्रगति में महिलाओं की सहभागिता

ये तीर्थ क्षेत्र हमारी अहिंसा स्थली हैं। अहिंसा के उपासक तीर्थंकरों ने यहां आत्म साधना करके निर्वाण प्राप्त किया। महिलामंडल यह सुनिश्चित करे कि इनकी गरिमा बनी रहे।

ध्यान रहे कि समृद्धि, प्रगति की आत्मा अहिंसा के बिना शांति से जीना तो दूर, मरना भी संभव नही हैं। अहिंसा के बिना जैन धर्म मृतप्राय ही है और अहिंसा का आधार सत्य है। अचौर्य, शील, अपरिग्रह उसके रक्षक और पोषक हैं। महिलाएं/ महिला मंडल इस बात का प्रचार-प्रसार करें।

महिलाएं/महिला मंडल लोगों को इस बात के लिए जागरूक करें कि तीर्थ स्थान योग साधना के स्थान हैं, भोग के नहीं इसलिए इन्हें साधना केन्द्र ही बने रहने दें। संयमी जीवों ने यहां से निर्वाण प्राप्त किया था अत: ये संयम की प्रेरणा देते हैं। इनकी गौरव गरिमा, पवित्रता व सुरक्षा कायम रखकर हम तीर्थों की प्रगति में सहयोगी बनें।

महिलाएं/महिला मंडल तीर्थक्षेत्र की समिति से बात करके उन्हें बताएं कि तीर्थों पर आवश्यक सुविधाएं तो हों परन्तु भोग विलासता के साधन एसी. टीवी आदि सामग्री न जुटाएं। याद रखें दूरदर्शन हमें देव दर्शन से तो दूर करता ही है, आत्मदर्शन की सम्भावना भी समाप्त कर देता है। यह आंखों से पिया जाने वाला जहर है। वीतरागता के स्थान को राग का निमित न बनायें।

महिलाएं प्राचीन पुराण का सन्दर्भ देकर यह बताएं कि तीर्थों की प्राचीनता कायम रखते हुए ही इनकी सुरक्षा व जीर्णोद्धार हो, नवीनीकरण के नाम पर कायापलट ही न कर दिया जाए।

जैन धर्म में ध्यान की भूमिका को स्पष्ट करते हुए यह प्रचार प्रसार करें कि ये तीर्थ क्षेत्र योगियों के ध्यान केन्द्र हैं। यहाँ जैन धर्म के गहन अध्ययन मनन चितन व तत्व चर्चा का वातावरण होना चाहिये। यहां का शांत और एकांत प्राकृतिक वातावरण आज भी जन कल्याण एवं आत्मकल्याण की पावन प्रेरणा दे रहा है। विशेष सम्पन्न धनी दातार महिलाएं धर्म प्रभावना एवं तीर्थोत्थान की व्यापी योजनायें बनायें।

महिलाएं शील और संस्कृति का महत्व समझाते हुए यह कोशिश करें कि तीर्थ आधुनिकता की चकाचौंध से दूर रहें। शील और संस्कृति की रक्षा के प्रति जागरुकता लायें। क्षेत्रों की प्रगति का हर संभव प्रयास करें।

तीर्थों की सुरक्षा का कार्य परम पवित्र प्रभावना का अनुपम अवसर हैं।

यहाँ हमें शुद्ध सात्विक सदाचारमय जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। इन पवित्र स्थानों पर रात्रिभोजन, जमीकंद, अभक्ष्य जिसमें असंख्य जीवों का घात होता है इसलिए हम सब मन वचन काय से त्याग करें व सभी साथी बहनों को भी संकल्प कराएं। तभी हम इनकी गरिमा को कायम रख सकेंगे। ध्यान रहे ये वह स्थान हैं जो हमें सिद्धालय जाने में निमित न बने। महिलाएं/ महिला समाज को इस बात से अवगत करायें।

समय समय पर इन तीर्थों पर आकर हम शिक्षण शिविर, गोष्ठी, धार्मिक आयोजन, सांस्कृतिक प्रतियोगिता, कंठपाठ, निबंध लेखन, तात्कालीन भाषण, भजन, प्रश्नमंच आदि ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन करें। बुराई, विकथा, विषय भोगों से बचें तभी हमारी तीर्थ वंदना सफल होगी।

जिनवाणी को व्यापक रुप से प्रचारित एवं प्रसारित करने, देश विदेश में जैन जगत में कहाँ क्या कुछ हो रहा है, इत्यादि की जानकारी देने हेतु समाज का मुखपत्र नियमित रुप से प्रकाशित करने की योजना बनायें तथा इसे प्रत्येक जैन परिवार तक पहुँचाने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

प्रशंसा की चाह न रखते हुए प्रशंसनीय कार्य करें। वर्तमान की चकाचौंध में फंसकर सादगी, संतोष और धर्म कभी न छोड़ें।

तीर्थों की व्यवस्था में महिलाओं का सहयोग

तीर्थ क्षेत्र हमारी श्रद्धा भक्ति और आस्था के केन्द्र हैं। ये तीर्थंकर भगवंतों एवं रत्नत्रय धारक संतों की याद दिलाते हैं। महिलाएं/महिला मंडल, तन, मन, धन से जहां जो आवश्यक लगे, अवश्य सहयोग करें और लोगों को भी इस बात के लिए प्रेरित करें यह परम पवित्र कार्य है।

पोस्टर, बैनर तथा मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से यह सन्देश प्रसारित करें कि तीर्थों का उपयोग अपने विषय कषाय के पोषण, पिकनिक, खेलकूद में न हो तथा यात्री यात्रा के दौरान समस्त साधर्मी जनों से अत्यंत वात्सल्य पूर्ण व्यवहार करें।

क्षेत्रों पर लौकिक कथा वार्ता, निंदा, पाप के कार्य न करें। तत्व चर्चा, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, सेवा और विनय आदि प्रयोगात्मक पद्धति अपनाएं।

क्षेत्रों पर स्वास्थ्य वर्धक शुद्ध सात्विक भोजन प्रसन्नता से करें और विचारें कि भोजन हमारे संयम में निमित्त बने और कब हमारी अनाहार दशा होवे।

आवश्यकतानुसार शुद्ध चिकित्सा, शुद्ध भोजनालय हो जिससे अधिक से अधिक जैन भाई बहिनों को आजीविका मिले जिससे जैन भाई बहिन आर्थिक रुप से सम्पन्न हों।

अल्प आयु के मनुष्य भव में भोग विलास हेतु यथा संभव घूमना फिरना ना करें, केवल धार्मिक तीर्थों की ही यात्रा करें।

लोगों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे प्रतिज्ञा करें कि उत्तम साहित्य पढेंगे, धार्मिक ग्रंथों का विनय और उत्साह पूर्वक स्वाध्याय करेंगे। अन्य कार्य यत्नाचार पूर्वक करेंगे।

यात्रा में जानवरों की सवारी जैसे तांगा आदि न करके आटो रिक्शा आदि करें जिससे जानवरों को अपने निमित्त से पीड़ा न हो। यह भी अहिंसा (दया) का प्रकार है।

गीले हाथों से पूजन की पुस्तक, जिनवाणी न छुएं। पुस्तक के अन्दर चावल आदि पूजन सामग्री न हो। अच्छे संस्कारों के लिए पाठशाला, शिविर आदि के माध्यम से प्रयत्न करें ताकि अन्य यात्री गण भी आपसे कुछ सीखें। तीर्थ क्षेत्रों पर पंखा, लाइट, नल आदि अनावश्यक न चलायें और न ही खुला छोड़ें।

धर्मशाला आदि आवास में रुकने पर वहां जितने दिन हम रुकते हैं तब तक वहां के सभी कार्यों की जिम्मेदारी हमारी है इसलिए यथोचित स्वच्छता का ध्यान रखें।

सदाचार सुखमय जीवन की आधारशिला है। सदाचार मानव जीवन के नंदन कानन वन का वह कल्पवृक्ष है जिसमें श्रद्धा ज्ञान चारित्र की तीन शाखाएं निकलती हैं। सदाचार व्यक्ति को दृढ निश्चयी और साहसी बनाता है। जैसे गाड़ी में ब्रेक और मकान में दीवार और दरवाजे की आवश्यकता होती है, वही आवश्यकता जीवन में यम नियम और संयम की है। इसके ना जीवन बिना ब्रेक की गाड़ी के समान है, न जाने कहां जाकर गिरेगी। महिलाएं/महिला मंडल इस बात को लोगों तक पहुँचाएं।

समय-समय, पर प्राचीन तीर्थों के दर्शन, पूजन, विधान, यात्रा आदि संघ बनाकर निकलें। सर्वेक्षण करें और जहाँ जिस व्यवस्था में कभी दिखे, स्वयं अपने मंडल द्वारा पूर्ति करें। ध्यान रहे की धर्म और धर्मायतनों पर खर्च करने से धन में कमी नहीं आती। लक्ष्मी तो चंचल है, रखने से नहीं रहती। यदि दान नहीं दिया तो खाया खोया बह गया के समान होगा।

तीर्थों पर वंदना करते हुए मार्ग में बालक, वृद्ध और असहाय लोगों को बाधक न बनकर साधक बनें। कूलर में नियम से अनछना पानी प्रयोग किया जाता हैं अत: तीर्थ क्षेत्र में कूलर का उपयोग न करें। साधर्मी वात्सल्य रखते हुए व्रती, त्यागी और अन्य साधर्मी की अव्यवस्था और तकलीफ में उसकी यथासंभव पूर्ण सहायता करें। यात्रा में धर्म प्रभावना को दृष्टिगत करते हुए भोग विलास और मौज मस्ती की भावना न रखें तथा ब्रह्मचर्य से रहें। अमर्यादित और अशुद्ध भोजन न करें। घर से संकल्प लेकर चलें कि तीर्थ क्षेत्र हमारे पवित्र निर्वाण स्थल हैं। जैसे मंदिरों का उपयोग भोग साधन में नहीं किया जाता जैसे ही ये परम पवित्र स्थान भोग के नहीं बल्कि आराधना के केन्द्र बनें।

सामान्य जैनत्व के चिन्हों से विभूषित सप्त व्यसन त्याग और अष्ट मूलगुण का पालन करें। ये धर्म के आयतन हैं अनायतन नहीं। ये अहिंसा स्थल हैं, यहाँ हिंसात्मक कार्य न हों। धर्मशाला आदि का पूर्ण भुगतान करकर और वहां के सब सामान को विधिवत सावधानी से सौंप कर ही रवाना होवें।

किसी विशेष दान का हठ न करते हुए जहां जो आवश्यक हो वह करें जैसे मंदिरों में मूर्ति पहले से ही है तो अन्य पुस्तकालय, वाचनालय और साधर्मी निवास में उपकरण आदि में सहर्ष दान दें और व्यवस्था में सहयोगी बनें।

अपनी शक्ति अनुसार अतिथि गृह, बाल, वृद्ध, महिला आश्रम में सहयोग दें। आवास स्थान स्वच्छ व व्यवस्थित रखें। तीर्थ यात्रा पवित्र भावना पूर्वक करें। सादगी, यत्नाचार, विवेक, अहिंसा और शील की मर्यादा पूर्वक वस्त्र पहनें क्योंकि हम देश की सीता, अंजना जैसी लज्जावान और शीलवान नारियां हैं।

क्षेत्रों पर पूजन व्यवस्था, धोती दुपटटा, पूजन सामग्री आदि में राशि देकर व्यवस्था बनाने में सहयोग करें।

तीर्थ क्षेत्रों की व्यवस्था में महिलाएं/महिला मंडल सरकार से मांग करे सभी तीर्थों को सड़कों से जोड़ा जाए। विद्युत व्यवस्था और पेयजल की समुचित व्यवस्था प्रदेश सरकार उपलब्ध कराये।

जहाँ गृहीत मिथ्यात्व की पूजा अर्चना होती हो ऐसे आयतनों तथा स्थानों पर पहुंचे ही नहीं और उन कार्यों में चंदा, दान की राशि न लिखायें क्योंकि इससे स्वयं की श्रद्धा दूषित होती हैं।

तीर्थ क्षेत्रों में मंदिर में व्यवस्था देना, शास्त्र छपाना, भेंट करना, बालकों की पाठशाला खोलना आदि ये श्रेष्ठ कार्य हैं। दान देने के बाद उसका सदुपयोग हुआ है की नहीं यह भी देखना चाहिए।

यात्रा के दौरान हरी घांस, छोटे-छोटे पौधे आदि पर पैर न रखें, ऐसा करने से छोटे-छोटे कीड़े मकोड़े तथा क्षुद्र जीवों की हिंसा होती हैं।

सौन्दर्य प्रसाधन जैसे इत्र, सेंट, लोशन क्रीम, पाउडर आदि जो सुन्दरता तथा शरीर को अच्छा दिखने के लिए लगाते हैं, उनमें बहुत पाप बंधता है। इस की एक बूंद में असंख्यात जीवों का घात होता है। तीर्थ यात्रा के समय तो इनका सर्वथा त्याग होना चाहिए।

रास्ते में बहुत छोटे-छोटे जीव कीड़े मकोड़े आदि घूमते रहते है, इसलिए व्यवस्थित सूर्योदय पश्चात् उजाले में ही दर्शनार्थ जाएं क्योंकि दयामय परिणामों से कषाय मंद होती है तथा शांति और गंभीरता बढती है।

आधुनिक समय के आविष्कार हमारे उपयोग रुपी वैभव की पूंजी को बर्बाद करते हैं। इनमें कब समय निकल जाता है, पता ही नहीं चलता। टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल और इन्टरनेट में एकाग्रता विशेष होने से उस समय नियम से अशुभ उपयोग की गहनता अधिक होती है कम से कम तीर्थ क्षेत्र पर इनसे बचना चाहिये।

सभी प्रकार के कंदमूल, बाजारों में उपलब्ध शीतल पेय, पेप्सी, कोकाकोला आदि इनमें असंख्य जीव राशि का पिंड होने से हिंसा का महापाप लगता है। तीर्थ क्षेत्र में बाजार की मिठाईयां, होटल का दूध आदि अमर्यादित होने से इनका सेवन योग्य नहीं है।

अमूल्य मानुष जीवन के क्षण विकथा, दूसरों के दोष देखने, पर की बुद्धि परखने में न करें। पूजन स्वाध्याय के बाद पुस्तक, माला, चौकी, आसन आदि यथा स्थान पर रखें।

दान देते समय विवेक रखें। पात्र दान की विशेष महिमा है, अपात्र कुदान की नहीं।

हमारे दान से अहिंसा धर्म की वृद्धि होना चाहिए। औषधि, आहार, अभय और शास्त्र चारों पात्रों को दान जरुर देवें।

प्रत्येक क्षेत्र में महिला मंडल एक फण्ड तीर्थ क्षेत्रों की सुरक्षा एवं विकास के लिए बनाये जिसमें समाज के लोगों को दान की महता को समझाकर कर, नियमित दान राशि के लिए भी प्रेरित किया जाए।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से बात करके कुछ महिला मंडल मिलकर अपने पास स्थित किसी एक तीर्थ की सुरक्षा एवं उसके विकास की जिम्मेदारी लें।

हमारी तीर्थ यात्रा धर्म परिणाम प्रधान और निवृत्ति प्रधान हो।

धर्मक्षेत्रों में परिणामों की विशुद्धता विशेष बढाएं, प्रमाद रुप न वरतें क्योंकि

अन्य क्षेत्र में किया पाप तो, धर्म क्षेत्र में होते नष्ट।
धर्म क्षेत्र में किये पाप पर वज्र लेप सम देते कष्ट।।

तीर्थ क्षेत्रों के दर्शन वंदना हेतु आवश्यक सामग्री

तीर्थ क्षेत्र में हँसता हुआ चेहरा, प्रदीप्त आँखें, धार्मिक भावना, पवित्र हृदय, मिलन सरिता का जल, स्नेह के पात्र, चारित्र की ओढ़नी, सम्मान का तिलक, और उच्च विचारों की सामग्री लेकर चलें।

उपसंहार

प्रकृति स्वरुपा नारी को ईश्वरीय शक्तियाँ के रूप में स्थान मिला है। कभी ज्ञान दायिनी के रुप में सरस्वती वैभवदायिनी के रु में लक्ष्मी तो कभी शक्ति के रूप में चंडी का रूप धारण कर नारी ने सर्वत्र पूज्य परमशक्ति के रुप में अपना स्थान बनाया। धर्मवेता तथा महान आचारशास्त्री मनु के अनुसार-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

प्राचीन कालीन भारतीय समाज में नारी केवल आदर की पात्र ही नहीं थीं, वरन उसे भी पुरुषों के साथ बराबर का स्थान प्राप्त था। चाहे कानून के तराजू पर या प्रथाओं-परंपराओं के मानदंड पर ही परखें, भारतीय नारी में बौद्धिक क्षमता वाक्पटुता आदि सभी दृष्टियों से पुरूषों के समकक्ष समझा जाता था।

महिलाएं अपने-अपने स्तर पर योग्य विद्वान के द्वारा अपने-अपने मंदिर में पाठशाला संचालित करें क्योंकि यदि हमारे बच्चे पाठशाला जायेंगें तो जैन धर्म के संस्कार उनसे आएंगे और वो एक जिम्मेदार नागरिक बनकर अपना तथा अपने तीर्थ क्षेत्रों का कल्याण कर सकेंगे। उन्हें इस बात का अहसास होगा कि तीर्थ हमारी धरोहर हैं, हमारी पूंजी हैं, हमारी जैन संस्कृति की, फूलवारी हैं। उनकी सुरक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है। जिस प्रकार हमारे पूर्वज हमें मकान, जमीन, जायदाद की रजिस्ट्री, बैंक बैलेंस और एफडी के कागज हमें सौंपकर जाते हैं तो हम उन्हें कितनी सुरक्षा और सावधानी पुर्वक सम्हाल कर रखते हैं, बारम्बार उन्हें देखते हैं और खुश होते हैं, ठीक उसी प्रकार हमारे परम पिता तीर्थकर हमें वसीयत में तीर्थ क्षेत्र सोंपकर गये हैं। उन्होंने यहाँ से निर्वाण प्राप्त किया, सुखी हुए और हमें भी यही प्रेरणा देते हैं कि तुम भी यहाँ आकर आत्मध्यान लगाओ और परम सुखी हो। ये हमारी अनमोल पूंजी हैं। धन, पैसा, सोना, चांदी तो परिग्रह है, पाप है परन्तु ये तीर्थ क्षेत्र हमें मोक्ष प्राप्ति में निमित्त होंगे।

श्रुत से है जैन संस्कृति की पहचान

- विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

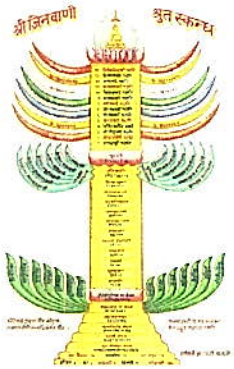

श्रुत पंचमी महान पर्व है। क्योंकि भगवान महावीर के पश्चात् तक श्रुत का ज्ञान एक दूसरे से सुनने से हो जाता था। कहा जाता है कि आचार्य अकलंकदेव एक पाठी थे। पूर्व समय में ज्ञान का क्षयोपशम इतना तीव्र होता था कि सुनने मात्र से वह याद रहता था। यह परिपाटी काफी समय तक रही। तत्पश्चात आचार्यों ने निमित्त ज्ञान के द्वारा यह जाना कि अब आगे श्रुत को यदि भावी पीढी को प्रदान करना है तो इसे लिपि बद्ध करना पड़ेगा। क्योंकि ज्ञान का क्षयोपशम घटता जा रहा है एवं स्मरण शक्ति भी घटती जा रही थी। ऐसा जानकर के उन्होंने श्रुत को लिपिबद्ध किया।

गौतम स्वामी ने दोनों प्रकार का ज्ञान लोहार्य को दिया। लोहार्य ने जम्बूस्वामी को दिया परिपाटी क्रम से से ये तीनों ही सकल श्रुत के धारक कहलाये। इस प्रकार से परिपाटी चलती रही। आष्टांग महानिमित्तज्ञानी श्रीधरसेनाचार्य ने अंगपूर्वश्रुतज्ञान का विच्छेद न हो जाये इसलिए महामहिमा अर्थात् पंचवर्षीय साधु सम्मेलन में आये हुए दक्षिणापथ के आचार्यों के पास एक लेख भेजा। लेख को पढ़कर उन आचार्यों ने शास्त्र के अर्थ को ग्रहण और धारण करने में समर्थ नानागुण युक्त, देश, कुल और जाति से शुद्ध ऐसे दो साधुओं को आंध्र देश की वेणानदी के तट से भेजा।

इधर धरसेनाचार्य ने स्वप्न देखा कि अत्यंत शुभ और उन्नत दो बैल ने हमारी तीन प्रदक्षिणा दी और वे चरणों में पड़ गये। स्वप्न से संतुष्ट हुए श्री धरसेन भट्टारक ने जयतु श्रुतदेवता ऐसा वाक्य उच्चारण किया और उठ बैठे। उसी दिन प्रात: वे दोनों मुनि श्रीगुरु के पास पहुँचे और विनयपूर्वक कृतिकर्म विधि से उनकी पादवंदना की। अनंतर दो दिन बिताकर तीसरे दिन उन दोनों ने निवेदन किया कि हम श्रुत अध्ययन हेतु आपके पादमूल में आये हुए हैं। उनके वचनों को सुनकर गुरु ने अच्छा है, कल्याण हो, ऐसा कहकर उन्हें आश्वासन दिया एवं उन मुनियों कि परीक्षा लेने का निश्चय किया। आचार्य श्री ने उन दोनों को दो विद्यायें सिद्ध करने के लिए दी जिसमें एक विद्या में मात्रा कम थी और दूसरी में ज्यादा थी। गुरु आज्ञा पाकर के विद्या को सिद्ध करने लगे। विद्या सिद्ध हो गई उन्होंने विद्या सिद्ध करने के पश्चात् देखा कि एक देवी के दांत बाहर निकले हुए हैं और दूसरी कानी है। विकलांग होना देवताओं का स्वभाव नहीं होता है। इस प्रकार उन दोनों ने विचार कर मंत्र संबंधी व्याकरण शास्त्र में कुशल होने के कारण शुद्ध करके, पुन: विद्या में सिद्ध की तत्पश्चात दोनों विद्या देवता अपने स्वभाव और अपने सुन्दर रुप में दिखाई देने लग गये।

भगवान धरसेन के समक्ष दोनों ने विनय सहित सारा वृतांत कह सुनाया। बहुत अच्छा इस प्रकार संतुष्ट हुए धरसेन भट्टारक ने शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र और शुभ वार में ग्रंथ पढ़ाना प्रारंभ किया। इस तरह क्रम से व्याख्यान करते हुए

धरसेन आचार्य से उन दोनों ने आषाढ शुक्ला एकादशी के पूर्वाण्ह काल में विनय पूर्वक ग्रंथ समाप्त किया। इस लिए संतुष्ट हुए देवों ने उन दोनों की पूजा खूब ठाटबाट से सम्पन्न की अनंतर धरसेनाचार्य ने एक का नाम भूतबली और दूसरे का नाम पुष्पदंत रखा। इन्हीं दोनों आचार्यो ने षट्खंडागम जैसे महान ग्रंथ की रचना अंकलेश्वर (गुजरात) में की। धवला में षट्खंडागम की रचना का इतना ही इतिहास पाया जाता है।

श्री भूतबली आचार्य ने षट्खंडागम की रचना पुस्तक बद्ध करके ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को चतुर्विध संघ के साथ उन पुस्तकों की श्रुत ज्ञान की पूजा की इसलिए श्रुत पंचमी तिथि तभी से प्रसिद्धि को प्राप्त हो गई और आज तक भी श्रुत पंचमी के दिन श्रुत की पूजा करते हैं। इस शुभ दिन सभी संघों में परम्परा से शास्त्र का अभिषेक (दर्पण में) करके पालकी में शास्त्र को विराजमान करके यात्रा निकली जाती है एवं श्रुत की पूजा एवं विधान किया जाता है।

चारित्रचंद्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने उनकी लेखनी के द्वारा 400 से अधिक ग्रंथों का सृजन किया गया है एवं पूज्य माताजी सदैव जहाँ पर भी विराजमान होती हैं श्रुत पंचमी जैसे महान पर्व को खूब ठाट-बाट के साथ मनाने की प्रेरणा करती हैं एवं शास्त्र को पालकी में विराजमान करके शोभा यात्रा निकली जाती है एवं षट्खंडागम विधान पूज्य माताजी की लेखनी के द्वारा लिखा गया है। मध्यान्ह में उस विधान को संघस्थ लोगों द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है क्योंकि यदि आज हम गौतम गणधर की वाणी को सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं तो वह श्रुत की ही देन है। यदि शास्त्र नहीं होते तो हम उस प्राचीन इतिहास को नहीं जान सकते थे। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने गौतमगणधर वाणी को तीन भागों में लिखा है। जिसमें गौतम गणधर के द्वारा प्रणीत समस्त सार को दिया गया है यदि आज वर्तमान में दिगम्बर जैण साधु जो क्रियायें करते हैं सामायिक, प्रतिक्रमण ये सभी गौतमगणधर स्वामी की वाणी है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने षट्खंडागम जैसे महान ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण करा करके सुरक्षित किया। क्योंकि आचार्यों को इस विषय पर अधिक चिंतवन रहता है कि हम किस प्रकार से श्रुतज्ञान को सुरक्षित करके आगे दे सकें।

श्रुत पंचमी पर्व का यही उद्देश्य है कि हम किस प्रकार से दिगम्बर जैन आगम को, श्रमण संस्कृति को जान सकें एवं उसका जितान प्रचार कर सकें वह कम है, क्योंकि आज आधुनिक युग है लोगों का शास्त्रों की और कम ध्यान रहता है। इसलिए जिस प्रकार से हो सके शिविरों के माध्यम से बच्चों के अंदर जैन धर्म से संबंधित संस्कारों को दे सकें। यही श्रुत पंचमी पर्व का उद्देश्य है। इसीलिए कहा है-

ज्ञान समान न आन जगत में, सुख को कारण

सब प्राणियों का कल्याण हो- आचार्य विद्यानन्द मुनिराज

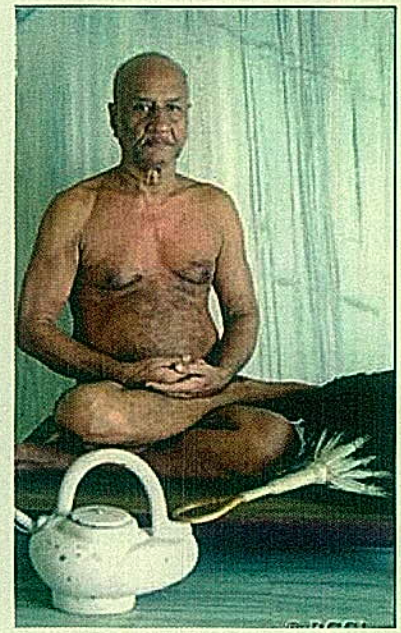

रविवार 23 अप्रैल 2017, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली। परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की 93 वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर आयोजित धर्म सभा को संबोधित करते हुए परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज ने कहा- जैनधर्म भगवान आदिनाथ से लेकर महावीर पर्यंत तक चला आ रहा है। सभी जीवों ने अपनी स्वानुभूति के बल से सिद्ध पर्याय की प्राप्ति की है। आज यहाँ पर उपस्थित सभी लोग इस बात का ध्यान रखें कि ज्ञान और संयम के बिना कभी भी किसी चीज का उद्धार नहीं होता है। हमें सतत मोक्षमार्गी बनना चाहिए। साधु-संतों की वैय्यावृत्ति करके आत्मकल्याण करना चाहिए। एलाचार्य प्रज्ञसागरजी महाराज वर्तमान में उभरते हुए अच्छे विद्वान एवं कुशल वक्ता है आज मैं उनको योग्यता व क्षमता को देखते हुए आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करता हूँ। वे आगे अपने संयम मार्ग के माध्यम से स्वयं का एवं अनेकों आत्माकों का कल्याण करे ऐसा मेरा मंगल आशीर्वाद है।

धर्म सभा को संबोधित करते हुए परमपूज्य आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनिराज ने कहा- परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की 93 वीं जन्म जयन्ती उत्सव समाज की उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रसंत आचार्यश्री ने श्रवणबेळगोल, गोम्मटगिरि, बावनगजा, भगवान स्वामी की जन्मभूमि वैशाली (बिहार) आदि अनेक तीर्थ स्थानों का उद्धार किया। उनके द्वारा किए गए धर्म एवं अध्यात्म के कार्य युगों-युगों तक स्मरण किए जाते रहेंगे। आचार्यश्री ने भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों को अनुकरण करने की प्रेरणा दी। वर्तमान में जीकर चेतन वर्धमान बन जाओ, देकर मति को सद्गति चेतन सन्मति तुम बन जाओ। वीर बनो, अतिवीर बनों, महावीर बनो। पूज्य आचार्यश्री देश, राष्ट्र, समाज एवं विश्वशांति के लिए निरन्तर प्रयन्तशील हैं। तत्पश्चात् परमपूज्य आचार्य श्री श्रुतसागरजी मुनिराज ने 14 मई,2017 को शाह ऑडिटोरियम में श्रवणबेलगोल महामस्तकाभिषेक 2018 कलश आवंटन समिति की आवश्यक बैठक में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया।

इसी पावन अवसर पर नवदीक्षित आचार्य श्रीप्रज्ञसागरजी मुनिराज ने कहा कि-जन्म दिवस तो सामान्य प्राणियों का मनाया जाता है, किन्तु जन्म जयन्ती महापुरुषों की मनाई जाती है। मेरी मंगल भावना है कि आज आचार्य श्री की 93वीं जन्म जयन्ती मनाई जा रही है, आगे जन्मकल्याणक मनाया जाए। गुरुदेव ने आज मुझे जो आचार्य पद से अलंकृत किया है, मैं उसकी गरि[illegible] और महिमा को सदा कायम रखूँगा ऐसा मैं वचनबद्ध होता हूँ। गुरुदेव को ज्ञान, संयम व आचार्य परम्परा को सदा आगमानुकूल से पालन कर अपनी आत्मा को पावन व पवित्र बनाऊँगा।

इस अवसर पर श्री राजेन्द्र नेमिनाथ उपाध्ये को अनेकों वर्षों की गुरुभक्ति के लिए श्री अनिल कुमार जैन (नेपाल) एवं उनके परिजनों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सुश्री रेखा राजगौंडा खोटोले को भी अनेकों वर्षों से गुरुभक्ति एवं आहारचर्या के लिए श्री सतीश चन्द जैन (एण्व) एवं उनके परिजनों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर कुन्दकुन्द भारती के अध्यक्ष-श्री सतीश चन्द जैन (एण्व) महामंत्री- श्री मुकेश कुमार जैन कोषाध्यक्ष श्री अनिल जैन (नेपाल), श्री राजकुमार जैन (वीरा), दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष-श्री चक्रेश जैन, साहू श्री अखिलेश जैन, श्री निर्मलकुमार सेठी, श्री मिलिंद फड़े (पूना) एवं कुन्दकुन्द भारती के समस्त ट्रस्टीगण एवं समाज के अनेकों समाजश्रे[illegible] उपस्थित थे।

मंच संचालन प्रो. वीरसागर जैन एवं भजन श्री प्रदीप जैन ने प्रस्तुत किए। आभार प्रकट श्री सतीश चन्द जैन (SCJ) द्वारा किया गया।

साहू जैन ट्रस्ट छात्रवृत्ति हेतु आवेदन सूचना

नई दिल्ली: साहू श्री शान्ति प्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन द्वारा स्थापित जनकल्याणकारी संस्था साहू जैन ट्रस्ट गत वर्षों की भांति इस वर्ष 2017-2018 में भी व्याजमुक्त ऋण छात्रवृत्तियों हेतु आवेदन आमंत्रित करती है।

आवेदन भारत में तकनीकी, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर, मेडिकल, स्नातक एवं स्नातकोत्तर आदि शिक्षा के लिए रुपए 2500/- से 25,000/- तक की वार्षिक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करे। जिनको गत वर्ष छात्रवृत्ति दी गयी थी यदि वे इस वर्ष भी छात्रवृत्ति चाहते हैं तो पुन: आवेदन करें।

आदवेदन पत्र की प्रति ट्रस्ट की निम्नलिखित साइट से डाउनलोड कर सकते है।

अवसाद से बचने जैन धर्म के सिध्दांत अनुकरणीय..!!

विजय कुमार जैन, राघौगढ़ म. प्र.

वर्तमान में युवा पीढ़ी तीव्रता से अवसाद ग्रस्त होती जा रही है। अवसाद को हम अंग्रेज़ी में डिप्रेशन कहते हैं। भारत ही नहीं दुनिया में अवसाद की बीमारी जोरशोर से बढ़ती जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की पहल पर सन १९५० से हर वर्ष ७ अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य आम जन को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के नेतृत्व में दुनिया के १९५ से अधिक देश अपने-अपने देश के नागरिकों को रोगमुक्त बनाने के लिये प्रयासरत हैं। विश्व स्वास्थ्य दिवस २०१७ की थीम अवसाद रोग की रोकथाम करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अवसाद को थीम बनाना सारे विश्व में अवसाद की बीमारी से चिंता व्याप्त है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दुनिया में पोलियो, रक्ताल्पता, नेत्रहीनता, कुष्ठरोग, टीबी, मलेरिया और एड्स जैसी भयानक बीमारियों की रोकथाम के लिये सक्रियता से प्रयास किये हैं। इस वर्ष अवसाद रोग को मुख्य लक्ष्य बनाना इस बात का प्रतीक है कि भारत ही नहीं दुनिया में अवसाद की बीमारी तेजी से फैल रही है तथा इस भयानक बीमारी से सारी दुनिया चिन्तित है।

वर्तमान में हम देख रहे हैं पुरुषों एवं महिलाओं की अपेक्षा किशोर व युवा वर्ग ज्यादातर अवसाद ग्रस्त हो रहे हैं। अवसाद किस कारण से होता है यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया जा सकता। मगर माना जाता है इसमें अनेक कारणों की मुख्य भूमिका रहती है। हमनें उन कारणों को भी जानने का प्रयास किया है अकेलापन, नींद नही आती है या ज्यादा आती है, बेरोजगारी, वित्तीय समस्या, वैवाहिक या अन्य रिश्तों में खटास, शराब या अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन करना, कार्य का अधिक बोझ, भोजन की अनियमितता।

वर्तमान में अधिकतर किशोर जिनकी आयु १२ से १८ वर्ष के बीच होती है ऐसे किशोर अवसाद ग्रस्त ज्यादा मिल रहे हैं। किशोरावस्था में अत्यधिक चिड़चिड़ापन अवसाद का सबसे बड़ा लक्षण होता है । इस आयु में इस बीमारी से ग्रसित युवक आसानी से क्रोधित हो सकता है। दूसरों से अशोभनीय व्यवहार कर सकता है। बच्चों पर माता पिता द्वारा पढाई के लिये डाला गया अत्यधिक दबाव और दूसरों से स्वयं का आकलन कम करने से भी किशोरों में डिप्रेशन अथवा अवसाद आने का प्रमुख कारण हो सकता है।

मैंनें अवसाद की बढ़ती बीमारी से किशोर या युवा वर्ग को कैसे बचाया जा सकता है इस प्रश्न को लेकर दिगम्बर जैन संतों से मार्गदर्शन लेने का प्रयास किया। हम दिनांक २ मार्च १७ को इंदरगढ़ जिला बूंदी राजस्थान में दिगम्बर जैनाचार्य संत शिरोमणि विद्यासागर जी महाराज के पटु शिष्य मुनि सुधासागर जी महाराज से मिले। जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में मुनि जी श्रृद्धालु जनों की जिज्ञासा का समाधान जैन धर्म के पुरातन सिद्धांतों से करते हैं। इस कार्यक्रम में मैंने जिज्ञासा की कि वर्तमान पीढ़ी को अवसाद की बीमारी से बचाने आत्महत्या की बढ़ रही घटनाओं को रोकने हमे उपाय बताये। मुनि सुधासागर जी ने कहा वर्तमान में सहशिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति से युवा पीढी में जो भटकाव आ रहा है उसे हम जैन धर्म के सिद्धांतों के अनुशरण से रोक सकते हैं। आपने कहा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने अपने पुत्र भरत और बाहुबली को एवं अपनी दो सूपुत्रियों ब्राह्मी और सुन्दरी की पढ़ाई की महल में ही अलग अलग व्यवस्था की। चारों सगे भाई बहिन थे। इनकी पढाई एक साथ नहीं करायी। मुनि जी का स्पष्ट कहना था सहशिक्षा में लड़के लड़की एक टेबल पर बैठ कर पढ़ाई करते हैं तो उनमें कामोत्तेजक भावनाओं का तीव्रता से विकास होता है। साथ रहने से सगे भाई बहिन के मन में विकृति आ जाती है। कामांध होकर वे अपने पवित्र रिश्ते को भूल जाते हैं। सगे भाई बहिन को भी एकसाथ नहीं रखना चाहिए।

मुनि सुधासागर जी का कहना है वर्तमान में माता पिता अपनी इच्छा थोपकर बच्चों की पढ़ाई कराना चाहते हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए अगर बच्चे में डॉक्टर बनने की योग्यता नहीं है तो उसे एम बी बी एस की कोचिंग करने मजबूर न कर उसकी पसंद का व्यापार कराना चाहिए। बचपन से ही हमें संतान को भारतीय संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा देना चाहिए ताकि वे पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकृष्ट न हों। आपने कहा भगवान आदिनाथ युगदृष्टा थे उस समय उन्होंने अपनी दोनों बेटियों को बाहर पढ़ने नहीं भेजा। हम भगवान आदिनाथ के मार्ग का जैन धर्म के अनुसार पालन कर लड़कियों को अकेली बाहर न भेजें। आपने कहा अपने बच्चों को पथभ्रष्ट होने अवसाद की स्थिति से बचाने प्रथम दायित्व माँ का कहा है, माँ को बचपन से संस्कार देने की आवश्यकता है।

आचार्य गुरूवर विद्यासागर जी की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिका रत्न अनंतमती जी ने महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर राघौगढ़ में युवा पीढ़ी को शुभ संकल्प दिलाया, पाश्चात्य संस्कृति का अनुशरण नही करेंगे भारतीय संस्कृति की रक्षा करेंगे। प्रेम विवाह अन्तर्जातीय विवाह और विधवा विवाह जीवन में कभी नहीं करेंगे। आपने कहा जैन धर्म में पांच पाप हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह का उल्लेख है ये पांच पाप ही दुनिया में अशांति और युवा पीढ़ी में अवसाद के प्रमुख कारण है। अनंतमती जी ने कहा विश्व शांति एवं अवसाद से बचने भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित पांच अणुव्रत अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का अनुशरण करने की आवश्यकता है।

आपने कहा विश्व शांति के लिये आज अणुबम नहीं अणुव्रत की आवश्यकता है। आज शिक्षा का उद्देश्य पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से अर्थ उपार्जन हो गया है। हमें अपनी इस सोच को बदलना होगा। शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना होना चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य दिवस ७ अप्रैल २०१७ को दुनिया में मनाया गया है। इस की थीम अवसाद को बनाने से यह स्पष्ट है अवसाद की बढ़ती बीमारी को लेकर सारी दुनिया चिन्ता ग्रस्त है। अवसाद को पूरी दुनिया से समाप्त करने आज जैन धर्म के सिद्धांत अनुकरणीय है।

प्रकृति की सुरम्य गोद में सिद्धक्षेत्र: मुक्तागिरि

- डॉ वारिश जैन

ऊँचे-ऊँचे पर्वत पर बहता सुंदर झरना कल-कल
देख प्रभु के जिन मंदिर, उमड़े मेरी भक्ति निबल।
अतिशय प्रभु का ऐसा देव करें केशर दृष्टि
ऐसे तीर्थ का वंदन कर हुई पावन मेरी दृष्टि।।

प्रकृति की सुरम्य वादियों में स्थित सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि की महिमा निराली है, इसे दक्षिण भारत का शिखरजी कहते है। इस क्षेत्र का इतिहास अति प्राचीन एवं अतिशयकारी है। इस क्षेत्र का नाम मेढ़ागिरि भी है, जिसका उल्लेख निर्वाण कांड में मिलता है।

अचलापुर की दिश इशान, तहों मेंढगिरी नाम प्रधान
साढे तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय।

इस पर्वत पर जो मंदिर हैं, उसके विषय में कहा जाता है कि लगभग एक सहस्त्र वर्ष पूर्व ऊपर से एक मेंढा ध्यानमग्न मुनिराज के सामने गिरा तत्पश्चात् उन्होंने मेंढे के काम में णमोकर मंत्र सुनाया जिसके फलस्वरुप वह मेंढा मरकर स्वर्ग में देव हुआ। देव होने पर उसे जातिस्मरण हुआ और वह उपकारक मुनिराज के दर्शन के लिए आया। तबसे पूरा पर्वत मेंढागिरि कहलाता है और तभी से इस पर्वत पर अष्टमी, चौदस के दिन केशर दृष्टि होती है। यहाँ चैत्यालय को अकृत्रिम चैत्यालय कहते हैं। 15 वर्ष पहले इसी मंदिर के सामने चरण पादुका पर माथा टेककर एक बंदर ने अपनी अंतिम श्वास ली थी। 1968 में भी होली की पूर्णिमा पर भी मंदिर क्रमांक-33 पर एक बंदर ने अपना देहत्याग किया था। इस तीर्थ के विषय में मुक्तागिरि मुक्ता बरसै, शीतलनाथ का डेरा जैसी पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि जब शीतलनाथ भगवान का समवशरण इस पर्वत पर आया था तब यहाँ मोतियाँ की वर्षा हुई थी इसी कारण क्षेत्र का नाम मुक्तागिरि पड़ा।

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पहाड़ी पूर्णत: क्षेत्र के स्वामित्व की है। यहाँ दिगम्बर जैन आम्नाय अनुसार ही पूजा-पाठ होता है। तीर्थ क्षेत्र के परिसर में प्रवेश करते ही एक महाद्वार तथा एक ऊंचा मानस्तंभ नजर आता है, जिसके दर्शन से सुखद अनुभव होता है। पर्वत की तलहटी में एक दिग. जैन मंदिर और धर्मशाला है। यहाँ भगवान आदिनाथ व महावीर स्वामी के भव्य मंदिर है। इसके पश्चात् प्रारंभ होती है, पर्वत पर निर्मित 52 मंदिरों की शारीरिक व मानसिक यात्रा। 52 मंदिरों में कुछ अतिप्राचीन हैं और शेष मे स अधिकांश 16 वीं शताब्दी के हैं। मंदिर नं.40 के समीप ही लगभग 250 फीट की ऊँचाई से पानी की धारा गिरती है, जिससे रमणीय जलप्रपात निर्मित हुआ है। पर्वत पर पहुँचने पर चारों ओर घना जंगल दिखाई देता है। जंगल की हरियाली और जलप्रपात का संगीत भक्तों के मन में अपूर्व शांति एवं उल्लास भर देता है। इसलिए चढाई की थकान का रंचमात्र भी अनुभव नहीं होता। दिनोंदिन मुक्तागिरी क्षेत्र पर धर्मानुरागी बंधुओं का आगमन बढता जा रहा है। यद्यपि यहाँ धर्मशाला निर्मित है, परंतु यहाँ पर कमरे छोटे-छोटे हैं। कई बार यात्रियों को परतवाड़ा ठहरना पड़ता है या बाहर खुले में सोना पड़ता है। इस असुविधा को देखते हुए यहाँ श्री विद्यासागर भवन के निर्माण का निश्चय किया गया है। पहाड़ी के मंदिर बहुत प्राचीन होने के कारण जीर्ण-शीर्ण हो गए हैं जिनके जीर्णोद्धार का कार्य पहाड़ी पर चल रहा है। सीढियों के नवीनीकरण का कार्य भी जारी है। क्षेत्र पर भोजनशाला बनाने की योज जिसके लिए दानदाताओं का सहयोग अपेक्षित है।

इस क्षेत्र पर प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को मेला लगता है। दूर-दूर से हजारों यात्री यहाँ पूण्यार्जन के लिए आते हैं। यह सिद्धक्षेत्र होते हुए भी अनेक प्रकार के अतिशयों से युक्त है। मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में अनेकों भक्तों ने विविध बाधाओं और सांसारिक रोगों से मुक्ति पाई है। एक विदेशी पर्यटक ने भी इस अतिशय का अनुभव किया है। एम.पी गवर्नमेंट डिस्ट्रिक्ट गेजेटियर (बैतूल) में इसका उल्लेख भी है। इस पावन सिद्धक्षेत्र एवं अतिशय क्षेत्र को में निम्न पंक्तियों के साथ सादर नमन अर्पित करती हूँ:-

पूण्यभूमि पूजूं सदा मैं सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरी,
साढे तीन कोडि मुनिवर जहांते भवपार ही।
वई उन्हें कर जोड़कर मैं छूटने भवजाल से,
नमन अर्पण है सदा, अतल हृदय के भाव से।

सम्पूर्ण जैन समाज के लिए बड़े हर्षोल्लास का विषय है कि

'एलाचार्य श्री बने अब आचार्य श्री'

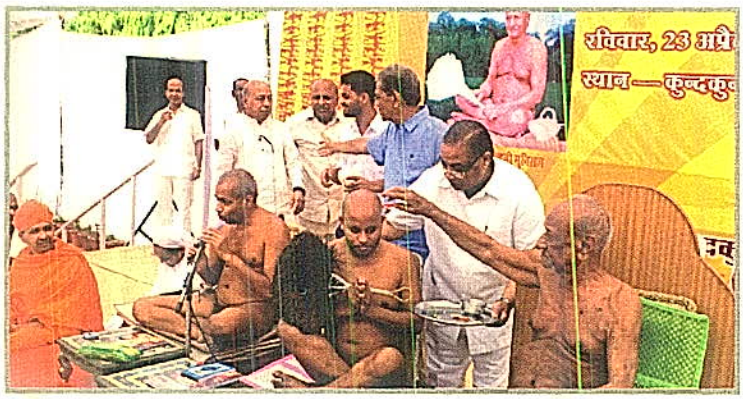

राष्ट्रसंत 'श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज' ने अपने प्रिय अन्तेवासी शिष्य 'एलाचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज' को आज 'कुन्दकुन्द भारती दिल्ली' में अपने '93वीं जन्म जयंती महोत्सव' के उपलक्ष्य में अपने वरदहस्त कमल से मंत्रोच्चारण पूर्वक अत्यंत प्रसन्नचित्त होकर 'आचार्य पद प्रदान कर' समस्त विश्व जैन समाज को एक 'अनमोल रत्न' प्रदान किया।

आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज ने सर्व प्रथम मुनि विकर्ष सागर को 16 मई 2010 ऋषभ विहार, दिल्ली में उपाध्याय पद से विभूषित किया था जिसमे मुनि विकर्ष सागर का नामकरण उपाध्याय प्रज्ञसागर किया था।आचार्य श्री ने 29 जुलाई 2012 को त्यागराज स्टेडियम दिल्ली में 'अपनी 50वीं स्वर्ण मुनि दीक्षा दिवस' के उपलक्ष्य में उपाध्याय श्री को एलाचार्य पद से विभूषित किया और आज 'अपनी 93वीं जन्म जयंती महोत्सव' के उपलक्ष्य में अपने सबसे प्रिय अन्तेवासी शिष्य को 'इस युग का सर्वश्रेष्ठ आचार्य परमेष्ठि का पद' प्रदान कर इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में सान्निध्य एवम उपस्तिथि 'आचार्य श्रुतसागर जी मुनिराज, 'स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टराक पंडिताचार्यवर्य स्वामी मूड़बद्री जैन काशी' भारत से आये सम्मानीय श्रेष्ठिगण एवं समस्त दिल्ली जैन समाज समस्त जैन समाज को गौरवान्वित किया है। इस असीम कृपा को जैन समाज सदा स्मरण रखेगा।

आचार्य 'शांति सागर' जी मुनिराज तत्शिष्य आचार्य 'पायसागर' जी मुनिराज तत्शिष्य आचार्य 'जयकीर्ति' जी मुनिराज तत्शिष्य आचार्य 'देशभूषण' जी मुनिराज तत्शिष्य आचार्य 'विद्यानन्द' जी मुनिराज तत्शिष्य आचार्य 'प्रज्ञसागर' जी मुनिराज। जय हो।

'परम्पराचार्य गुरवे नमः'

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

चम्पाबाग जैन मन्दिर, ग्वालियर

- वसन्त गोधा

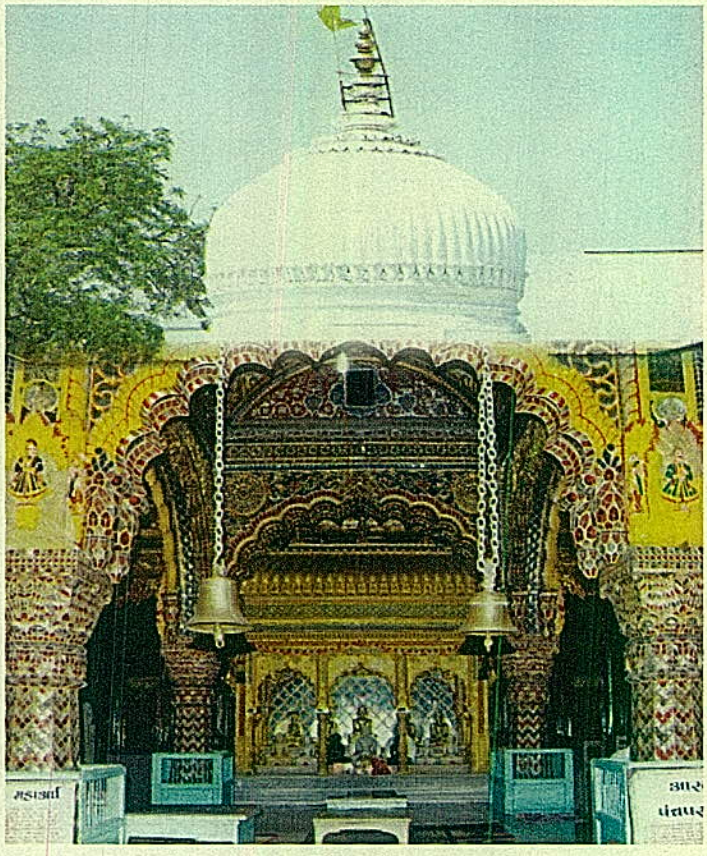

प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र सोनागिर के पास ग्वालियर का सबसे प्राचीन धार्मिक चमत्कारिक एवं दर्शनीय स्थल चम्पाबाग का श्री दि.जैन बीस पंथी पंचायती बड़ा मन्दिर, दानाओली हाथीद्वार के अन्दर पूर्णरूपेर्ण स्वर्ण कार्य व कांच की कलाकारी से सुशोभित है। 11 वेदियों में राजस्थानी शैली में बना 101-101 फुट पर 108 खंभो पर निर्मित शिल्प व वास्तुशास्त्र के अनुरूप भव्य अतिशयकारी मंदिर का निर्माण संवत 1729 में प्रारंभ जो करीब 350 वर्ष पूर्व सेठ जुगराज जी मोहनलाल जी गोधा परिवार द्वारा श्रीमती चम्पाबाई जो सेठ जुगराज की गोधा की धर्मपत्नी थी तथा जयपुर राज्य के प्रसिद्ध मंत्री दीवान श्री अमर सिंह जी की बहिन थी जिन्होंने ही श्री महावीर जी का मन्दिर भी बनवाया था उन्हीं के नाम पर चम्पाबाग मन्दिर व अन्य सम्पत्तियों का निर्माण कराया था इसकी विशेषता है कि मूलवेदी में मूलनायक भगवान आदिनाथ विराजमान है। एक चैत्यालय व पद्मावती माता की मूर्ति जो साथ आई थी व भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति में देव, शास्त्र गुरु चरण नवदेवता व गदा लिये हुये क्षेत्रपाल जी बिराजमान है [illegible] चौबीसी 7 शिखर भी बने है आदिनाथ भगवान के साथ गौमुखी यक्ष व माता चक्रेश्वरी विराजमान है, एक मूर्ति पद्मावती माता की कमण्डल लिये करीब 1100 वर्ष प्राचीन है खड़गासन में माता पद्मावती भी है स्फटिक मणी व मूंगा रत्नों की मूर्तियों भी है। विश्व की सबसे छोटी प्राचीन मूर्ति भी यहीं है यहां प्रवेश करते ही अतिशयकारी मनोकामना पूर्ण करने वाले जागृत क्षेत्रपाल बाबा भी है। मंदिर में करीब 5000 से अधिक शास्त्र भण्डार, धार्मिक पुस्तकें पत्रिकायें व प्राचीन शास्त्र जो कहीं उपलब्ध नहीं है, सुरक्षित हैं। स्वर्णकार्य युक्त शास्त्र भी है। इसके अंतर्गत तीन धर्मशालओं एक पाठशाला व एक औषधालय संचालित है। नसियां जी व ग्वालियर का जती जी का मंदिर, जनकगंज, दौलतगंज, माधौगंज, इन्द्रगंज व नागोरी मंदिर व सोनागिर का प्रसिद्ध (मंदिर नं.15, कांच मंदिर) बीस पंथी कोठी, धर्मशाला व मंदिर नं.10 तलहटी में है। एक बार अवश्य पधारें व दर्शन कर महान पुण्य का संचय करें।

अनूठी पहल

अनूठी योजना के समस्त जागरूक सदस्य जिन्होंने अपने अपने फॉर्म भरकर रजिस्टर्ड करवाया है और हमारे संयोजको को अपने यहाँ से पेपर रद्दी कार्टून एवम् अन्य सामग्री देने का संकल्प लिया है उन समस्त सदस्यों के लिए यह खुश खबरी है की मध्यांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी को दानवीर नवीन जी गुलशनराय जी जैन गाजियाबाद निवासी ने एक लोडिंग रिक्षा इस कार्य को अंजाम देने के लिए प्रदान की है तीथक्षेत्र कमेटी उनका बहुत बहुत आभार मानती है और उनके परिवार को साधुवाद देती है जिन्होंने इतने पुण्य का कार्य किया।

अब 1 या 2 दिन मैं यह रिक्षा पूरे इंदौर शहर की प्रत्येक कालोनी एवम् रद्दी प्रदाता के निवास से यह एकत्रित कर के तीर्थों के विकास के कार्य को जो भी जहाँ जैसा कमेटी में प्रस्ताव आएगा उसे करने का प्रयास करेगी, तो सभी सदस्यों एवम् संयोजको से निवेदन है कि आप सभी इस कार्य को सफल बनावे यही निवेदन है।

इस बारे में एक मीटिंग भी 1 या 2 दिन में कमेटी की होगी जिस पर विस्तृत चर्चा कर इसे कैसे सफल बनावे इस पर विचार किया जायेगा

विमल सोगानी, अध्यक्ष, तीथक्षेत्र कमेटी-मध्यांचल

राष्ट्रपति ने दिया बांग्ला कवि शंख घोष को 52 वां ज्ञानपीठ पुरस्कार

नई दिल्ली, राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने आज यहाँ बालयोगी सभागार संसद भवन में आयोजित समारोह में बांग्ला के सुप्रसिद्ध कवि आलोचक साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित पद्मभूषण प्रोफेसर शंख घोष को 52 वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार के रूप में उन्हें ग्यारह लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र, वाग्देवी की प्रतिमा, शॉल व श्रीफल भेंट किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि मेरे लिए यह विशेष गौरव की बात है कि मैं अपनी मातृभाषा बांग्ला के सुप्रसिद्ध साहित्यकार को देश का सर्वोच्च एवं प्रतिष्ठित साहित्य पुरस्कार ज्ञानपीठ सम्मानित कर रहा है। प्रोफेसर शंख घोष को सम्मानित करते हुए मैं स्वयं को भी विशेष गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर घोष की कविताओं में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य की झलक साफ दिखाई देती है। गुरुदेव की गीतांजली ने अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य प्रेमियों में जो सम्मोहन पैदा किया है अपनी एक अलग पहचान बनाई है वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के साहित्य की अद्भुत प्रतिभा को दर्शाता है।

श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा कि आज सम्पूर्ण विश्व के साहित्य प्रेमी उत्कृष्ट भारतीय साहित्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भातीय भाषाओं के साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट पहचान दिलाने के लिए हर संभव कोशिश की जाएगी तथा भारतीय ज्ञानपीठ उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि 55 वर्ष पूर्व साहू शान्तिप्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन ने भारतीय संविधान में वर्णित भाषाओं के साहित्य के समग्र विकास की कल्पना करके भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना की थी। आज वह वट वृक्ष बनकर भारतीय भाषाओं के साहित्य के विकास में अपनी भूमिका को भली-भांति निभा रहा है। आज ज्ञानपीठ पुरस्कार राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान बना चुका है।

राष्ट्रपति ने बड़े औद्योगिक घरानों का आहवान करते हुए कहा कि वे साहित्य को बढ़ावा देने की अपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझते हुए उद्योगों के साथ-साथ भारतीय साहित्य को भी बढ़ावा देने में कप्तान की भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि प्रो. घोष की कविताओं में न सिर्फ लय है बल्कि सामाजिक परिवेश की भी गहरी झलक उसमें दिखाई देती है। उन्होंने जिस तरह से अपने पाठकों को समृद्ध बनाया है उसी तरह से अपने विद्यार्थियों की संवेदनशील सोच पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला होगा।

अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री विजेन्द्र जैन ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय साहित्य एवं साहित्यकारों के प्रति राष्ट्रपति का प्रेम उनके साहित्य के प्रतिरुप एवं भारतीय मानस के प्रति अटूट विश्वास को दर्शाता है। आज हम पुरस्कार समारोह के अवसर पर साहू श्री शान्तिप्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन को नहीं भूल सकते। वर्षों एवं भारतीय साहित्य के समग्र विकास की कल्पना करते हुए उन्होंने भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना की थी। आज हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम ज्ञानपीठ के संस्थापकों के सपने को पूरा करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर शंख घोष की कविताएँ आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का काम करती हैं। वे सामाजिक सरोकार के साथ-साथ रवीन्द्र शैली के विशिष्ठ कवि है।

ज्ञानपीठ प्रवर समिति के अध्यक्ष प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नामवर सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह एक ऐतिहासिक अवसर है कि आज हम युवा पीढ़ी को प्रेरित करने वाले बाँग्ला कवि को देश का सर्वोच्च साहित्य पुरसकार ज्ञानपीठ प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर शंख घोष रवीन्द्र साहित्य के विशेषज्ञ होने के साथ-साथ सामाजिक प्रतिबद्धता एवं आधुनिक पीढी को प्रेरणा देने वाली कविताएँ लिखते हैं।

इस अवसर पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होने वाले प्रो. शंख घोष ने कहा कि साहित्य अकादमी व पद्मभूषण से सम्मानित होने के बाद ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होना मेरी साहित्य साधना का सवोत्तम सर्वोत्कृष्ट एवं स्वर्णिम अवसर है।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भारतीय ज्ञानपीठ के प्रबन्ध न्यासी साहू अखिलेश जैन ने कहा कि सन् 1965 में ज्ञानपीठ पुरस्कार की शुरुआत की थी। इसकी संस्थापक श्रीमती रमा जैन इसे अपना मानस पुत्र मानती थी। आज हम प्रोफेसर शंख घोष को सम्मानित करते हुए स्वयं को भी सम्मानित महसूस कर रहे हैं। ★★★★

बिखरते परिवारों के दुष्प्रभावों का समाधान : मैत्रीधाम

वर्तमान वैज्ञानिक युग में संयुक्त परिवार का कोई महत्व नहीं रह गया है। पुत्र–पुत्रियों को उच्च शिक्षा ग्रहण कर नौकरी/व्यापार हेतु बडे शहरों/विदेशों में पलायन करना पड़ रहा है, ऐसी स्थिति में वे वृद्ध माता–पिता के साथ रहकर तन, मन से सेवा करना चाहे तो भी असमर्थ हैं।

मेरा कटु अनुभव है कि वरिष्ठ नागरिक हर तरह से साधन सम्पन्न होते हुये भी निठल्लेपन के कारण मानसिक परेशानियों से अत्यंत दुःखी हैं। ऐसी स्थिति में न तो सन्तों से उचित प्रेरणा मिल पाती है, और न सामाजिक संगठनों/व्यवस्थापकों का तनिक भी ध्यान है। निरन्तर इस बारे में विचार रहता है कि समस्त तीर्थों पर जिन मन्दिर परिसरों में निवास स्थान/धर्मशालायें निर्मित हैं। इतना ही नहीं हर शहर/कस्बों में भी इनका अभाव नहीं है, अगर यात्री कभी आते भी हैं तो कुछ समय पश्चात् चले/लौट जाते हैं, ऐसी स्थिति में सार–सम्भाल के अभाव में उपेक्षित पड़ी रहती हैं।

इन धर्मशालाओं को ठीक कर इनमें से कुछ में यदि मैत्री धाम बनाकर उनमें यदि वरिष्ठ साधर्मी जनों को बसाया जाये एवं उनको मैत्री धाम की संज्ञा दी जाये तो यह एक प्रभावी कार्य होगा। अगर प्रचार–प्रसार कर वरिष्ठ नागरिकों को संगठित किया जावे तो निश्चित रूप से धर्म की प्रभावना में विस्तार वृद्धि होगी।

सामूहिक जीवन निर्वाह होगा जो (संयुक्त परिवार) का रूप लेकर निश्चित ही देव दर्शन, पूजा, आरती, सन्तों की सेवा, आहारदान आदि में निश्चित ही वृद्धि करेगा। अगर आप मेरे विचारों से सहमत होंगे तो मैं एवं मेरा परिवार तन, मन, धन से सहयोग के लिये भी वचनबद्ध है।

राजमल जैन 'निरखी',
104, संतोषनगर, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर–302 019 (राज.)
0141–2391505, मो 094605 00771